द्वितीय अध्याय

माला वर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व

2.1 जीवन परिचय

2.2 शिक्षा-दीक्षा

2.3 पारिवारिक पृष्ठभूमि

2.4 विवाह

2.5 कृतित्व

2.6 सम्मान

2.7 संपादन/प्रकाशन/प्रसारण

2.8 हिन्दी यात्रा साहित्य के विकास में माला वर्मा का योगदान

2.9 माला वर्मा का साक्षात्कार

2. माला वर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व:

2.1 जीवन परिचय : माला वर्मा का जन्म 30 जनवरी 1956 को आरा, भोजपुर (बिहार) के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम डॉ. बी.एस. सिन्हा था। परिवार के सदस्य एवं मित्र उन्हें प्यार से रमणी बाबू बुलाते थे। पेशे से रमणी बाबू आँखों के डॉक्टर थे। तथा माता का नाम श्रीमती बृज देवी था। माता कुशल गृहणी एवं उर्दू भाषा की अच्छी जानकार थी। अपनी पांच बहनों में माला वर्मा सबसे छोटी एवं दो भाइयों से बड़ी हैं।

2.2 शिक्षा-दीक्षा: माला वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा की शुरुआत किशोर दल शिशु भवन, आरा से हुई थी जहां उन्होंने कक्षा चार तक अभ्यास किया। उसके बाद कक्षा चार से कक्षा छः तक की पढ़ाई माला वर्मा ने राजकीय कन्या उच्चविद्यालय आरा भोजपुर से पूर्ण की औऱ लेखिका ने यहीं से हायर सेकंडरी की पढ़ाई पूर्ण किया।

हायर सेकंडरी के बाद, माला वर्मा ने 'महंत महादेवा महिला महाविद्यालय आरा' में अपना दाखिला कराया, जहां उन्होंने आई.एस.सी, (विशेष) विषय की पढ़ाई की। उन दिनों आई.एस.सी. एक वैकल्पिक विषय के रूप में बच्चों को पढ़ाया जाता था। इसके बाद माला वर्मा ने हर प्रसाद दास जैन कॉलेज आरा से बी.एस.सी ऑनर्स की डिग्री प्राप्त की, जो मगध विश्वविद्यालय बोधगया से संबद्ध था।

2.3 पारिवारिक पृष्ठभूमि: लेखिका माला वर्मा का बचपन ऐसे परिवार में बीता जहाँ पठन-पाठन को अधिक महत्व दिया जाता था। परिवार के बच्चों की रुचि पढ़ाई में लगी रहे, इसलिए उनके पिता ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक पुस्तकों से घर का वातावरण शिक्षामयी बना दिया। पिता जी बच्चों को अपने पसंदीदा विषय को पढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करते थे। और पत्र-पत्रिकाएं व पुस्तके पिता जी खूब मगाते थे। जिसका जिक्र करते हुए माला वर्मा कहती हैं कि, "इतनी सारी पत्रिकाओं व पुस्तकों का हमारे घर आना, अपने आप में अजूबा ही था। सचमुच मेरे पापा बहुत उदार दिल वाले इंसान थे। इतने बड़े घर-गृहस्थी का बोझ उठाने के बाद भी अपने बच्चों की रुचि का मान रखा, जिसे जो चाहे खरीदे, पढ़े कोई बंधन नहीं।"[1]

माला वर्मा कहती हैं कि- "हम भाई-बहनों में कभी भी कोई भेद भाव नहीं किया गया और पढ़ने लिखने की सारी बुनियादी सुविधाओं का सबसे भरपूर मौका दिया।"[2] घर में तरह-तरह की पत्रिकाएं मंगाई जाती थी। लेखिका कहती है कि- "हमारे घर में सब की रुचि के अनुसार पत्रिकाएँ आती जिनमें बच्चों के नाम

पर बालक, पराग, चंदामामा, नंदन थे तो बड़ों के लिये धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सरिता, मनोरमा, सुषमा, नवनीत, कादम्बिनी, रीडर डाइजेस्ट, सोवियत भूमि, कल्याण आदि थे। इनके अलावा घर में 'शिवानी' की हर किताब मौजूद थी। उनकी नयी पुस्तकें बाज़ार में आयी नहीं कि तुरन्त खरीदा जाता। हम सबके साथ-साथ अम्माँ को भी पढ़ने का बहुत शौक था और शिवानी तो उनकी सबसे प्रिय लेखिका थी। हमारे पूरे खानदान को शिवानी पसन्द थी। मैं कहती जैसे हर परिवार का अपना एक फैमिली डॉक्टर होता है वैसे शिवानी जी हमारी 'फैमिली राइटर' हैं।"[3]

लेखिका के घर में सब की पसंद की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं आती थी, बच्चों के लिए बड़ों के लिए एवं बुजुर्गों के लिए अपनी पसंद के विषय की पत्रिकाएं एवं पुस्तकों को पढ़ने की आजादी थी। तथा परिवार के सारे लोग लेखिका शिवानी से प्रभावित थे। घर का वातावरण इतना शिक्षामयी था कि लेखिका की माता भी शिवानी को खूब पढ़ती थी और शिवानी उनकी प्रिय लेखिका थी।

घर के सारे सदस्यों को पढ़ना इतना प्रिय था कि टॉयलेट में बैठकर भी वह किताबें पढ़ते थे इस बात का जिक्र लेखिका स्वयं इस प्रकार करती है, "एक रोचक बात का उल्लेख यहाँ करती चलूँ। हमारे घर में सबको टॉयलेट में किताब पढ़ने की बुरी लत थी। सिर्फ एक अम्माँ को छोड़कर और मुझे याद है गुलशन नन्दा का एक पूरा उपन्यास मैंने टॉयलेट में खत्म कर डाला था। जब एक पूरा उपन्यास वहाँ खंगाला जा सकता है तब छोटी-मोटी पत्रिकाओं की क्या विसात। इस मामले में पापा दो कदम आगे थे। उन्होंने टॉयलेट रूम में किताब रखने का रैक ही बनवा दिया था। जहाँ सब तरह की रचनाएँ पड़ी होती, जो मर्जी पढ़िये और रख दीजिए। अम्माँ हम सबकी इस आदत से बहुत चिढ़ती थीं। उन्हें ये सोचकर गुस्सा आता था कि हम उसी गंदे हाथ से उन पत्रिकाओं को हैंडल करते हैं जिसे अम्माँ को भी पढ़ना होता था। हमें साफ-सफाई का पूरा हवाला देना पड़ता था फिर भी उनका शक न जाता।"[4]

पढ़ने के अलावा घर में गीत-संगीत का भी अच्छा प्रभाव था। और परिवार का इस बात पर बल होता था की बच्चे गीत-संगीत को भी सीखते चले। लेखिका कहती है कि "पढ़ने के साथ-साथ घर में गीत- संगीत का भी माहौल था। हारमोनियम सिखाने के लिये एक मास्टर रखा गया।"[5]

लेखिका के पिता ये मानते थे कि, बच्चों को पढ़ाई के लिए अच्छा वातावरण मिलना चाहिए, वे शिक्षा के महत्व के साथ कला के महत्व को समझते थे इसलिए उन्होंने बच्चों में संगीत कला का विकास हो

ऐसा सोचकर संगीत शिक्षक को अपने घर क्लास लेने का आग्रह किया था। पिता अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास हो ऐसा चाहते थे।

माला वर्मा आगे बताती हैं कि, "मेरे पापा को इस बात का बड़ा ही शौक था कि उनकी बेटियाँ डॉक्टर बनें पर अफसोस, मुझसे बड़ी चारों बहनों ने आर्ट्स लेकर पढ़ा और अंत में विज्ञान की डोरी मुझे थमायी गई ताकि मैं डॉक्टर बन पापा के सपने को पूरा कर सकूँ। मुझे ट्यूशन देने के लिये तब चार-पाँच टीचर बहाली किये गए ताकि विज्ञान में मेरी रुचि आगे भी बनी रहें और मैं डॉक्टरी की पढ़ाई कर सकूँ।"[6]

माला वर्मा साइंस की छात्रा होते हुए भी उनका मन कहानी, कविता और गीत संगीत की तरफ अधिक लगता था। उन्होंने एकाध बार पी.एम.टी की परीक्षा भी दी और खाली हाथ लौटी। डोनेशन के बलबूते इंडिया के किसी बड़े मेडिकल कॉलेज में उनका एडमिशन हो सकता था, उनके पिता की खूब इच्छा थी कि माला वर्मा का मेडिकल में दाखिला हो जाए। पिता का कहना था जितने रुपए खर्च हो लेकिन आप डॉक्टरी की पढ़ाई करें। पिता अपनी एक बेटी को डॉक्टर बनते देखना चाहते थे। "पर ऐन मौके पर मेरे दादाजी देवदूत बनकर प्रकट हुए तथा पापा को डांटा, इतनी दूर बेटी को भेजोगे ? अगर तबीयत खराब हुई तो उसकी चिट्ठी भी जल्दी नहीं मिलेगी। और कोई जरूरत नहीं लड़की को दूसरे प्रांत में भेजकर डॉक्टर-वाक्टर बनाने की, जो पढ़ाई करनी है यही रह कर पढ़ें।"[7]

तत्कालीन समय में समाज में व्याप्त असुरक्षा की भावना से लेखिका के दादाजी उन्हें घर से दूर नहीं जाने देना चाहते थे। उन्हें अपनी पोती माला वर्मा की चिंता थी कि इतने दूर रहते हुए उनके साथ संपर्क कैसे किया जा सकेगा ? इस चिंता के चलते उन्होंने अपने पुत्र डॉक्टर रमनी बाबू से कहां, बेटी चाहे डॉक्टरी की पढ़ाई ना भी करें लेकिन यही हमारे आंखों के सामने रहकर पढ़ेगी। इस घटना के संदर्भ में लेखिका कहती है कि खैर जो हुआ मेरे हक में अच्छा हुआ।

2.4 विवाह: माला जी का विवाह 22 फरवरी सन 1976 में डॉ. दुर्गा दत्त वर्मा से हुआ। लेखिका भले स्वयं डॉक्टर नहीं बन पाई परंतु उनके पिता ने अपने तरह उन्नत एवं विश्वसनीय जीवनसाथी 'डॉक्टर' माला वर्मा के लिए पसंद किया, जिनसे मैडम की शादी हुई। माला वर्मा ने अपने किताब 'माला वर्मा की चन्द कहानियाँ' में लिखा हैं- "डॉक्टर तो न बन सकी पर एक डॉक्टर की पत्नी जरूर बन गई। कोलकाता के एक उपनगरीय शहर हाजीनगर के एक जूट मिल में मेरे पति डॉक्टर हैं।"[8]

शहर में पली बढ़ी लेखिका विवाह के बाद पति के घर आती हैं। भोजपुर जिले का एक गांव उमरावगंज जहां उन्हें अपनी सांस-ससुर, देवर, ननंद के साथ रहना था। माला वर्मा के लिए यह पूरी विपरीत परिस्थिति थी। परंतु पति के घर से उन्हें किसी भी तरह की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा औऱ घर के सभी सदस्यों ने माला वर्मा को नए परिवार में शामिल होने में खूब सहयोग किया। माला वर्मा जितना समय ससुराल में रहीं इस दौरान गाँव की महिलाओं से उनके अटूट रिश्ते स्थापित हुए, आगे चलकर अपनी कहानियों में माला वर्मा ने इन्हीं पात्रों का जिक्र भी किया हैं। माला वर्मा गांव की महिलाओं की तकलीफों को ध्यान से सुनती औऱ उन तकलीफों का समाधान कैसे निकाला जाए इस गंभीर विषय पर खूब चिंतन करती थी।

माला वर्मा का वैवाहिक जीवन संबंध : ससुराल की प्रशंसा करते हुए माला वर्मा लिखतीं हैं कि, "कोलकाता के एक उपनगरीय शहर हाजीनगर के एक जूट मिल में मेरे पति डॉक्टर हैं। यहाँ आने से पहले मुझे अपने ससुराल में एकाध महीने रहना पड़ा जो भोजपुर का ही एक गाँव उमरावगंज था। अटपटा जरूर लगा क्योंकि ऐसे माहौल से मैं कभी वाकिफ न थी। शहर की चाकचौध में पली बढ़ी स्त्री एकदम से एक खांटी गाँव का दर्शन करा देना, मेरे पास सास-ससुर, ननद-देवर सब के सब बहुत अच्छे स्वभाव के थे। मैं शहर की हूँ और एक बड़े घर की बेटी, इसका मान करके उन्होंने मेरा पग-पग पर सहयोग दिया और मुझे किसी बात की तकलीफ न हो, इसका ख्याल रखा। प्रत्युत्तर में मैंने भी वैसा ही रिर्टन किया जो उन्हें पसंद था। ससुराल में इस बात की आज भी तारीफ होती है कि मैंने शहरी होने के बावजूद इस घर, इस गाँव को अपना समझा और जितने भी दिन रही सबसे स्नेह आदरभाव बनाये रखा।"[9]

माला वर्मा जी को इस गाँव से अपने कहानियों के पात्र मिलते है तथा कहानियों के लिए कथा भी मिलती है। इस बात को माला जी कहती है- "ये तो बाद में पता चला कि जाने-अनजाने मेरी कई कहानियों का आधार वह गाँव बन गया था। पर्देदारी थी पर इतनी भी नहीं कि उससे मुझे उलझन हो। जब तक ग्रामीण महिलाओं से बातचीत होती, उनका दुखदर्द सुनती और मन ही मन उन्हें सहेज विवेचना करती। कालान्तर में उन सभी चरित्रों को फिर से मनन किया और बारी-बारी सबको कहानी का जामा पहनाती गई। अपनी खुद की लिखी कहानियों पर रोती और उन पात्रों को याद करती जाती जिन्होंने मुझे अपनी संघर्षमयी जीवनी का ब्यौरा देकर मेरी आधुनिक सोच पर लगाम कस दी थी। जीवन में दुख तकलीफ, अभाव क्या होता है- इसकी कल्पना मैंने पहले कभी न की थी। ससुराल का ग्रामीण परिवेश, वहाँ के सरल-सीधे लोग, उनका सद्व्यवहार, ईमानदार आचार-विचार, मेरे प्रति सबका स्नेह सद्भाव ये सब मेरे जीवन में एक

अमिट याद बन कर रह गये। और मुझे इस बात का सुखद अहसास है कि मैंने अपनी कहानियों में उन सबका समावेश करके दिल ही दिल में उनके प्रति कृतज्ञता व श्रद्धा ज्ञापन किया। भले वे सभी पात्र इस दुनिया में नहीं रहे पर मुझे तो मानवता का पाठ पढ़ा ही गये।"[10]

ससुराल जाने पर उनके पिता द्वारा उन्हें पढ़ाई करने के लिए खूब सहयोग मिला, लेखिका इस संदर्भ में कहती हैं- "ससुराल में मेरा समय कैसे व्यतीत होगा, कुछ पढ़ने की सामग्री मिलेगी भी या नहीं... ये सोच कर मेरे पापा ने करीब छत्तीस धर्मयुग को अलग-अलग मढ़वा 'प्रत्येक में बारह (१२) धर्मयुग' कर मेरे संग रवाना किया था ताकि मैं वहाँ खाली वक्त में अपनी रुचि का साहित्य पढ़ सकूँ। धर्मयुग के अलावा, फिल्मी पत्रिका सुषमा की भी बीस प्रतियाँ थीं।"[11]

लेखिका के घर मे शिक्षा को बहुत महत्व दिया जाता था। तभी पिता द्वारा बेटी की शादी हो जाने के बाद भी उनकी बेटी पुस्तकों से पढ़ाई-लिखाई से जुड़ी रहे पिता ने उनकी बेटी की रुचि का ध्यान रखा। और माला जी के ससुराल जाने के बाद भी उनके लिए पुस्तकों का प्रबंध करते रहे। हमारे समाज में हर संतान को आज ऐसे पिता की जरूरत हैं जो बेटे-बेटी के विवाह के बाद भी अपने संतानों की रुचि के बारे में सोचते हैं। वर्तमान में हमारे समाज की स्थित यह हैं कि माता-पिता को लगता हैं कि बच्चों के विवाह के बाद सारी जिम्मेदारी बच्चों की हैं। लेकिन बेटियां अपने माता पिता की चिंता हमेशा करती हैं। विवाह के बाद बेटियों को एक नहीं बल्कि दो परिवारों का ध्यान रखना पड़ता हैं। ऐसे में हर बेटी की यह चाह होती हैं कि उनके पिता डॉ. बी. एम. सिन्हा की तरह हो जो अपनी बेटी का ख्याल वैसा ही रखें जैसा कि विवाह के पहले एक पिता अपनी बेटी का रखता हैं।

माला जी आगे अपने सांस ससुर की प्रशंसा करते हुए कहती हैं- "ससुराल के लोग आश्चर्य में थे कि ऐसा तो उन्होंने कभी नहीं सुना था। ये सब देख मेरे ससुर जी ने रोजाना एक हिन्दी अखबार मंगाना शुरू किया जो वहाँ से कई किलोमीटर दूर बिहियाँ स्टेशन से मंगाया जाता था, उसे लाने वाले कौन? उस कच्ची सड़क पर दौड़ने वाली बस के ड्राइवर या खलासी होते थे जिनसे चिरौरी करके अखबार लाने की गुजारिश की जाती थी। सचमुच मेरे सास-ससुर देवता तुल्य थे।"[12]

माला वर्मा के इस कथन से यह ज्ञात होता है कि, लेखिका को अपने घर के साथ ही साथ पति के घर वालों का भी पढ़ने लिखने के लिए खूब सहयोग मिला। वर्तमान समय में घर गृहस्थी की परिभाषा रहन-सहन में बदलाव हुआ है लेखिका आज की लड़कियों से आह्वान करती है कि वह अपने सास-ससुर की

सेवा करें, ना की उन्हें बुढ़ापे में किसी भी तरीके का त्रास दे। लेखिका ने अपने सास-ससुर की खूब सेवा की और वह लिखती हैं कि- "सचमुच मेरे सास-ससुर देवता तुल्य थे। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम कई वर्ष हमारे साथ हाजीनगर में गुजारे और मैंने मन प्राण से उनकी सेवा की। आज इस आधुनिक युग में बहुएँ घर तोड़ू परफार्मेंस का प्रदर्शन कर रही हैं। अपने पति के अलावा दूसरा कोई बर्दाश्त नहीं चाहे उस प्यारे पति को जन्म देने वाले उसके सगे माँ-बाप ही क्यों न हों। कुछेक अपवादों को छोड़ दें तो आज घर-घर में यही कहानी सुनने में आ रही है। इन आधुनिक तितलियों को ये नहीं भूलना चाहिए कि अपने बड़े बुजुर्गों की अवहेलना करना उनके लिये कभी न कभी ज़रूर भारी पड़ेगा। ऊपर वाले की मार भले बेआवाज हो पर वो एक-एक आँसुओं का हिसाब किताब यहीं, इसी जीवन में चुकता करेगा। क्या इसमें सच्चाई नहीं।"[13]

आज की पीढ़ी, बुजुर्गों की, माता-पिता की अवहेलना करती है, इस संदर्भ में लेखिका ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में आज की युवा पीढ़ी को संदेश देना चाहा है कि हम बुजुर्गों को किसी भी रूप में तकलीफ देंगे या परेशान करेंगे तो कुदरत न किसी रूप में जरूर रुलाएगी, आपके अच्छे कर्मों एवं बुरे कर्मों का सारा हिसाब किताब इसी जन्म में होता है। यहाँ लेखिका के दार्शनिक विचारों का चित्रण देखने को मिलता है।

ससुराल में कुछ दिनों तक रहने के पश्चात अब लेखिका को 'हुकुमचंद जूट मिल' हाजीनगर जाना था जहां उनके पति कार्यरत थे। लेखिका के लिए अब यह स्थान एकदम नया था। इस जगह की प्राकृतिक सुंदरता एवं निर्माण की विशेषता बताते हुए लेखिका लिखती है कि- "खैर, एकाध महीने के प्रवास के बाद मैं अपने पति के पास हाजीनगर चली आई। यहाँ एक दूसरा ही माहौल मिला। भागीरथी नदी के किनारे बाग-बागीचों से सुसज्जित कैंपस और उसी के बीच अवस्थित अपना ऑफिसर्स क्वार्टर पुराने ज़माने का अंग्रेज़ों द्वारा रचित विशालकाय इमारत, जिसकी भव्यता देख आज भी लोग विस्मय से भर उठते हैं। ऐसे स्थान पर मुझे रहने को मिला और तब से यानि 1976 से लेकर अब तक 2023 उसी कैंपस, उसी क्वार्टर में रहती आ रही हूँ। कैंपस के बाहर का इलाका चटकलिया कहलाता है जबकि कैंपस के भीतर का रौवदाब अलग है। और हो भी क्यों न, यहाँ कभी अंग्रेज़ों ने मिल संभाली थी, भले इसके असली मालिक इंदौरवासी हुकुम चंद सेठ थे। बाद में कई हाथों से होता हुआ अब ये वाजेरिया सेठ के हाथ में है। यहाँ एक बात का उल्लेख करती चलूँ। इसी मिल में मेरे ससुर जी ने करीब सैंतीस वर्षों तक काम किया था और ठीक उसी वक्त रिटायर होकर गाँव चले गए जिस वर्ष हमारी शादी हुई, ये संयोग ही था। मेरे पति का जन्म

इसी मिल में हुआ था और पढ़ाई-लिखाई यहीं लोकल में करके कोलकाता से मेडिकल की पढ़ाई। इसी हुकुमचंद जूट मिल को एशिया का सबसे वड़ा जूट मिल समझा जाता है।"[14]

माला वर्मा के लिए अब पुनः नया परिवेश था। नए स्थान पर हिंदी बोलने वाले कम तथा बंगाली बोलने वाले लोग अधिक थे ऐसे में लेखिका के पति ने उनका मार्गदर्शन किया और उन्हें बंगला भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जिसका जिक्र करते हुए माला वर्मा बताते हैं कि- "यहाँ सब कुछ मिला मगर साहित्य के नाम पर कुछ नहीं। आसपास बंगाली परिवार ज्यादा और हिन्दी भाषी कम थे, बंगला बोलनी मुझे आती न थी पर कुछ महीनों के अन्दर मैंने इस भाषा पर विजय पायी और टूटी-फूटी बंगला बोलने लगी। अब मैं इस समाज में मिसफिट न थी। इस कार्य में मेरे डॉक्टर पति ने बहुत सहयोग किया। हिंदी-बंगला पुस्तिका आयी। हाँ, बोलना तो सीखा पर पढ़ना अभी तक नहीं जानती। हिंदी से मिलते-जुलते शब्दों को पहचान जाती हूँ पर पूरी लाइन पढ़ना मुश्किल था। मेरे पति का कहना था अगर बंगला पढ़ना सीख जाओगी तो बंगला के महान साहित्यकारों को पढ़ सकती हूँ।"[15]

पति के सुझाव के बाद माला जी ने बंगाली सीखने के लिए बंगाली भाषा से हिंदी भाषा के अनुवाद की किताबों को खंगालना शुरू किया और अनुवादित पुस्तकों के मिलने के बाद उन्हें खूब पढ़ा। इन पुस्तकों के लेखक विमल मित्र, रविंद्र नाथ टैगोर, शरद चंद, आशापूर्णा देवी, सुकुमार राय, बंकिम चंद, महाश्वेता देवी, तारा शंकर बंधोपाध्याय, विभूतिभूषण, शंकर, बनफूल आदि थे।

बांग्ला भाषा एवं बांग्ला संस्कृति को सीखने के लिए समझने के लिए लेखिका ने बांग्ला फिल्मों को देखना शुरू किया और इस बात का वर्णन लेखिका इस प्रकार से करती है कि- "बंगला पिक्चर यहीं आकर देखना शुरु किया। बाद में ऐसा चस्का लगा कि पुरानी जितनी भी बंगला ब्लैक एंड व्हाइट पिक्चर टी वी पर दिखाई जाती देखी। सत्यजीत रे की फिल्मों से लेकर मृणाल सेन तक, कुछ भी नहीं छोड़ा। सचमुच बंगाल की धरती अपने उत्कृष्ट साहित्य और महान सिनेमाकारों की वजह से और भी उर्वर, अजर-अमर हो गई। मैंने दोनों का भरपूर लाभ उठाया जिससे मेरा साहित्य थोड़ा समृद्ध ही हुआ।"[16]

माला वर्मा का मानना है कि, बंगाल की संस्कृति एवं बंगाल की धरती उनके लिए वरदान साबित हुई है बंगाल में आने के कारण ही उनके लेखन कौशल्य में और वृद्धि हुई है ऐसा लेखिका मानती है। कैंपस के कुदरती दृश्यों का एवं कैंपस के लोगों की तारीफ करते हुए लेखिका आगे अपनी बात कहती है कि- "यहाँ बंगाली लोगों के अलावा कुछेक बिहारी परिवार भी थे। सबसे अच्छी निभती, प्रकृति के बीच रहने का

मज़ा क्या होता है, यहाँ देखने को मिला। चंद कदमों पर बहती कलकल गंगा। उसमें तैरती नावें, स्टीमर, बड़े-बड़े जहाज एक अनूठा दृश्य उपस्थित करते। जहाँ सूर्योदय हर रोज़ अचंभित करता, वहीं डूबता हुआ सूरज गंगा की सतह पर बहुत देर तक अपनी रोशनी फैलाये रखता और वो पीली रोशनी सोने की चादर सदृश उस पार से इस पार चली आती थी। मैंने अब तक भारत के अलावा दुनिया के कई देशों में सूर्योदय व सूर्यास्त का दृश्य देखा है पर जैसी छटा अपने हाजीनगर के इस कैंपस में रहते हुए देखी- वो अवर्णननीय है, अनूठी है। पिछले 42 वर्षों से यही दृश्य देखती आ रही हूँ पर उसे देखने का खुमार आज तलक कम नहीं हुआ।"[17]

विवाह के बाद अब हिंदी भाषा से बांग्ला भाषा सीखने व समझने में माला वर्मा धीरे-धीरे अनुकूल होती जा रही थी। शुरुआत में मुश्किल लगने वाली परिस्थितियां अब उन्हें आसान होती नजर आ रही थी। इस समग्र यात्रा में उन्हें उनके माता-पिता, सास-ससुर, पति सभी का सहयोग नियमित रूप से मिल रहा था जो उन्हें साहित्य की दुनिया में आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था।

संतान :

माला वर्मा अपने संतान का परिचय देते हुए बताती है कि, "सन् 1978 में एक बेटे की माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज वो 'अभीजीत-जीतू' एक अमेरिकन कम्पनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। कई वर्षों तक अमेरिका 'न्यू जर्सी' रहने के बाद वो यहीं कोलकाता के साल्टलेक इलाके में उस कम्पनी में कार्यरत है। नौ वर्ष पूर्व उसकी शादी हुई और अब खुद दो सुन्दर बेटियों का पिता बन गया है। हाँ, अब में अरित्री 'आन्या व मायरा' की दादी हूँ। बहू रश्मिप्रिया भी बहुत अच्छी है। हमारा खूब आदर मान करती है।"[१८]

हर किसी के जीवन में केवल सुख ही सुख नहीं मिलता, जीवन की इस यात्रा में मनुष्य को अनेक प्रकार की घटनाओं का अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है। माला वर्मा को भी उनके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी का सामना करना पड़ा था जिसमें उन्हें अपने दूसरे पुत्र हारु को खोना पड़ा। छोटे बेटे की असमय मृत्यु ने माला वर्मा को अंदर से पूरा तोड़ दिया था। माला वर्मा इस घटना को स्वीकार नहीं कर पा रही थी और उन्होंने आत्महत्या करने का निर्णय कर लिया था। ऐसी स्थिति में लेखिका के पति, सास-ससुर ने माता-पिता भाई बहनों ने उन्हें संभाला, एवं ऐसे गलत कदम ना उठाएं तथा आगे जीवन की संभावनाओं के बारे में उन्हें समझाते हुए आगे की राह दिखाई। इसका वर्णन स्वयं लेखिका इस प्रकार करती है- "जीवन में सबको मनचाहा नहीं मिलता और न ही कभी सुख ही सुख। दुख

किस्मत में लिखा लाई थी। बड़े पुत्र के जनम के छह वर्ष बाद 1984 में हमारी दूसरी संतान हुई। दिली इच्छा थी इस बार बेटी होती, पर बेटा हुआ। खुशियां अब भी कहीं से कम न थीं। बड़े शौक से हमने उसका पुकार का नाम हारू रखा। बंगाल में यह नाम बड़ा प्रचलित है। दुर्भाग्यवश उसके जन्म के चार महीने बाद ही पता चला हारु एक गंभीर बिमारी 'थैलेसीमिया' से ग्रस्त है। ये रक्त सम्बन्धित एक जानलेवा रोग है जिसमें अपना खून नहीं बनता। मेरे पति के तो होश ही उड़ गये। बोले, इसका नाम बदल कर हारू से अन्य कर दो। ये तो छोटी उम्र में ही हारने लगा। बड़े बेटे का नाम जीतू था। हमने सोचा विचारा और हारू से नाम चेंज करके 'हीरु' रख दिया ताकि उसे संबल मिले, पर ये सब मन का छलावा था। हाँ उसका दूसरा नाम हर्षवर्द्धन था- ये नाम भी उसे कहाँ बचा पाया। उस छोटी उम्र से ही हीरु को महीने में दो बार खून चढ़ाने की कवायद शुरू हो गई जो उसके उम्र के पौने सात वर्ष तक चलता रहा जब तक कि उसने हमेशा के लिये अपनी आँखें बंद न कर ली। ये सन् 1991 की पाँच जुलाई थी।"[19]

जीवन में कई तरह के उतार-चढ़ाव आते रहते है। जीवन एक रेखीय नहीं होता यह बात तो सत्य है लेकिन कभी-कभी कुछ जख्म ऐसे भी मिलते है जो आजीवन पूरे नहीं होते है। उनकी तीस हमेशा बनी रहती है। लेखिका भी अपने छोटे बच्चे के गंभीर बीमारी से ग्रसित एवं उसके लंबे उपचार के बाद भी उसे बचा नहीं पाती है। इस बात का जिक्र करते हुए वे लिखती है कि- "ये सात वर्ष हमारे लिये किसी दुःस्वप्न से कम न थे। हमसे ज्यादा तो उस बच्चे ने कष्ट सहा। महीने में दो बार कोलकाता जाकर खून चढ़ाना, रुपया पैसा, समय, प्यार-ममता सब कुछ खर्च करने के बाद भी हम इस युद्ध को हार गए। उसके इलाज के लिये हमने खेत-खलिहान, गहने, जमीन-जायदाद आदि बेचने तक का सोच लिया था पर इतना करने पर भी रिजल्ट जीरो होता। भावुकता पर नियंत्रण रखा गया तो वहीं लोगों के दबाव में आकर महामृत्यंजय का जाप भी करवाया परन्तु नियति को कुछ और ही मंजर दिखाना था। ईश्वर से वैसे भी खूब लगाव न था और इस घटना ने तो जले पर नमक छिड़क दिया। इस दुखद होनहारी के बाद ईश्वर शब्द से नफरत तथा हमेशा के लिये उनसे छत्तीस का आँकड़ा बन बैठा।"[20]

यह दुखद घटना लेखिका को लंबे समय तक परेशान करती रही। लेकिन किसी दुख को कब तक पाला जाए। किसी सच को कब तक अस्वीकार किया जाता रहे। अंत में हमें सब कुछ स्वीकार कर अपने को संभालना ही पड़ता है। लेखिका भी धीरे-धीरे इस दुख से निकलने का प्रयास करती है। वे कहती है कि- "इस त्रासद घटना के बाद कई महीनों तक मैं संज्ञाशून्य सी बनी रही। कई बार आत्महत्या का विचार पनपा लेकिन लम्बी आयु लिखा लायी थी इसलिये आत्महत्या जैसा बोल्ड कदम न उठा सकी। ऐसे वक्त

में पति, सास-ससुर, मेरे माँ-बाप, भाई-बहनों ने मेरे दिल को संभाला और बहुत कुछ खोकर फिर से नये जीवन का संचार मन में भरना शुरू किया। आँखों के सामने अब अभिजीत था। उसकी पढ़ाई लिखाई कैरियर और अपना विस्मृत साहित्य व गीत-संगीत जो अर्से से भूली बैठी थी, फिर से जाग्रत हुआ। और इस बार आगे बढ़ी तो लौटने की कोई वजह न मिली। सन् 1991 से मैंने दुबारा कागज कलम उठाया। पत्र लेखन से लेकर कहानी कविताएँ प्रारंभ हो गयीं।"[21]

इस असह्य घटना से उभरने में लेखिका को काफी लंबा समय लगा, वह पुनः अपने कार्य क्षेत्र में वापस आ गए। और फिर से लेखन कार्य शुरू किया, इस दौरान जीवन के अंधेरे वाले समय से उजाले में लाने का कार्य उनके पति ने किया। लेखिका इस संदर्भ में लिखती है कि- "मेरे पति का इसमें बड़ा सहयोग मिला। भले वे लेखन का काम नहीं करते पर साहित्य में उनकी अपार रुचि है। कई नामी साहित्यकारों की कविताएँ उन्हें कंठस्थ हैं और जब-तब कविता पाठ करते हैं। वही हाल पुराने गीतों के साथ भी है, सैंकड़ों गीत मुखस्थ हैं। जब जो फरमाइश कर दे। मुझे आश्चर्य होता है मेडिकल की दुरुह पढ़ाई के बीच गीत-संगीत के लिये वक्त कैसे निकाला। इतना ही नहीं हर तरह का वाद्ययंत्र भी बजाना जानते हैं तथा घर में खरीद कर रखा भी गया है। आप सबमें कोई संगीत प्रेमी हो तो आपका मेरे घर में स्वागत है।"[22]

एक मां अपनी संतान को दुख में कभी नहीं देख सकती और मां के लिए संतान वियोग जैसी घटना जीवन की बड़ी त्रासदी होती है लेखिका ने इस त्रासदी को देखा और महसूस किया। इस बुरे वक्त में उनके परिवार के लोगों ने उनका सहयोग किया तथा उनकी मानसिकता को फिर से पठन-पाठन के कार्य की ओर मोड़ने का कार्य किया।

2.5 कृतित्व:

कृतियाँ किसी लेखक की लेखकीय जमा पूँजी होती है। लेखक के विचारों का स्थायी निवास उसकी कृतियाँ होती है। इन्ही में वह अपने विचारों को पिरोता है समाज को समर्पित कर मुक्त हो जाता है। लेखिका माला वर्मा हिन्दी साहित्य में यात्रा साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण लेखिका है। उनका लिखा हुआ यात्रा साहित्य अत्यंत व्यापक है। जिनमें वे अपने यात्रा अनुभवो के साथ अनेकानेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों से हमें अवगत कराती चलती है। माला जी के लेखकीय विशेषताओं को चिन्हित करते हुए बिनय कुमार शुक्ल जी लिखते है कि- "माला वर्मा जी हिंदी भाषा में यात्रा वृतांत लिखने वाली अद्वितीय रचनाकार हैं। इनकी समस्त रचनाओं में सुलभ एवं सहज भाषा में जिस प्रकार से पर्यटक स्थलों का वर्णन आया है वह

अद्वितीय है।...उनकी सबसे अच्छी खासियत यही है कि ऐतिहासिक घटनाओं से वर्तमान की कड़ी को जोड़ते हुए पर्यटक के लिए सुलभ और सहज भाषा में प्रस्तुत विवरण किसी भी स्थान पर सहज ही घूम आने के लिए व्यक्ति को उत्प्रेरित कर देता है।"[23]

माला वर्मा के यात्रा की दूसरी विशेषताओं को ओर संकेत करती हुई डॉ छोटू राम मीणा का कथन महत्त्वपूर्ण है। वे कहते है कि- "माला वर्मा के यात्रा संस्मरणों की यह विशेषता है कि उनके यहाँ सिनेमा और संगीत के बिना कोई भी यात्रा पूर्ण नहीं होती है। देश व काल के साथ हिंदी सिनेमा का जिक्र करने के साथ दुनिया के सिनेमाई यात्रा का आनंद भी पाठक को मिलता है।"[24]

माला वर्मा जी देश-विदेश का निरंतर भ्रमण करती रही है और उनपर लगातार लिखती रही है। यह सक्रियता व तत्परता उन्हे सबसे अलग बनाता है। माला वर्मा के लेखकीय व्यक्तित्व में एक जिज्ञासु की आत्मा निवास करती है। उनके भीतर जानने की उत्सुकता और जानकार उसके बारे में लिखने की उत्कंठा बनी रहती है। उनके यायावरी पर टिप्पणी करते हुए डॉ. धर्मपाल कपूर। दिनेश धर्मपाल जी लिखते है कि- "मेरी छोटी बहिन घुमंतु हैं, पर ऐसी जिसमें एक कवि का, साहित्यकार का हृदय भी भ्रमण करता है। ऐसा कर वह मात्र यात्रा नहीं करती, साथ-साथ मानवीय सरोकारों को भी जोड़ती चलती हैं और एक वृहद् विश्व को हमारे समक्ष उकेरती चलती हैं !"[25]

किसी लेखक या लेखिका के साहित्य का प्रभाव पाठक वर्ग पर जब विशेष रूप से पड़ता है जब लेखक के साथ पाठक का तादात्म होता है। उनके विचारों का साधारणीकरण होता है। माला वर्मा के लेखक कला की यह विशेषता है कि वह अपने पाठकों को बाधकर रखती है। लेखिका के लेखकीय विशेषताओं को ओर इंगित करते हुए नंदलाल साव जी लिखते है कि- "लेखिका का लेखन सरल, सहज और रोचक है। वे पाठकों को अपनी यात्रा के साथ इस तरह से जोड़ती हैं कि वे मानो खुद उनके साथ यात्रा कर रहे हों। वे विभिन्न स्थानों, लोगों और अनुभवों का सजीव वर्णन करती हैं, जो पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देता है।"[26]

माला वर्मा की लेखकीय दृष्टिकोण अत्यंत सूक्ष्म है। उनका खोजी मन निरीक्षण प्रिय है। इस खूबी के कारण उनके लेखन में रोचकता का विशेष प्रभाव है। माला जी के इस लेखकीय पहलू पर प्रकाश डालते हुए विजय कुमार तिवारी लिखते है कि- "मैं चमत्कृत होता हूँ, उनकी सूक्ष्म से सूक्ष्म पकड़ को लेकर, कुछ भी छूटना नहीं है। यह उनके लेखन शैली की विशेषता है और उनके मन की उड़ान भी। उनका लिखा हर यात्रा संस्मरण यात्रियों के ज्ञान को बढ़ाने वाला है, जो लोग यात्रा नहीं कर पाते, उन्हें घर बैठे दुनिया

को देख लेने का सुख मिलता है और माला जी सारा दृश्य, बहुत कुछ दिखा देती हैं। मैं उन्हीं की लेखनी से बहुत सारे देशों से परिचित हुआ हूँ।"[27]

माला वर्मा जी जितनी अधिक साहसी यात्रा करने में है उतनी ही साहसी अपनी बात रखने में भी है। उनके लेखन में किसी तरह की कोई संकुचित मानसिकता का परिचय हमें नहीं मिलता है। उनके लेखन में सब कुछ कैसे कारीने से साफ सुथरा कर लिखा गया हो। उनके यात्राओं में क्रमबद्धता का पूर्ण अनुपालन किया गया है। डॉ बिक्रम कुमार साव जी लिखते है कि- "माला मैम एक साहसी पर्यटक हैं और साहसी लेखक भी। पर्यटन के दौरान वह किसी भी प्रकार की चुनौती को स्वीकार कर लेने से हिचकती नहीं है।"[28]

किसी भी लेखक के लेखन में जीवन्तत उसका प्राणाधार होता है। विना जीवंतता के लेखन कार्य उबाऊ हो जाता है। और पाठक लेखक के हाथ से निकल जाते है। माला वर्मा के लेखन में एक प्रकार का आकर्षण है। और यह आकर्षण उनकी लेखकीय खूबियों के कारण आयी है। उनके साहित्य का विश्लेषण करते हुए नंदलाल साव लिखते है कि- "माला वर्मा की लेखनी में एक प्रकार की चित्रात्मकता है, जो हर दृश्य को जीवंत कर देती है। शब्दों में रंग और रूप इतना प्रवाहमयी होता है कि पाठक इन स्थलों के साथ-साथ उनके भीतर के अनुभवों को भी महसूस कर सकते हैं। लेखिका के शब्द जैसे हर अनुभव को गहरे और जीवंत रूप में हमारे सामने रख देते हैं, जिससे हर पंक्ति में नयापन और आकर्षण महसूस होता है।"[29]

कविता संग्रह : माला वर्मा की छः कविता संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुकी है जो निम्नलिखित है -

सूरज की चाह, अम्मा-पापा, आन्या, अंकिता हँस रही थी, मध्यांतर (सम्पादन), पूनो का चाँद।

लघुकथा संग्रह : माला वर्मा के चार लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए है, वह निम्न है-

परिवर्तन, थोड़ी सी हँसी, मैं हूँ न !, इंग्लिश-विंग्लिश, मायरा।

कहानी संग्रह : माला वर्मा की दस कहानी संग्रह अब तक प्रकाशित हुये है, जो निम्नलिखित है-

बसेसर की लाठी, नीड़, म्युनिसिपैलिटी का भैंसा, घुघली की माई, माला वर्मा की चंद कहानियाँ, भाटिन अंगुरिया बूंछ, बसेसर की लाठी (द्वितीय संस्करण), नयनतारा, म्युनिसिपैलिटी का भैंसा (द्वितीय संस्करण), मेरी लोकप्रिय कहानियाँ, हम दोनों।

यात्रा वृत्तांत : माला वर्मा की अब तक चौबीस यात्रा साहित्य की पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है जिनका विवरण इस प्रकार है-

यूरोप : यह कृति लेखिका की प्रथम यात्रा साहित्य की रचना है, जिसका प्रकाशन पीयूष प्रकाशन से सन 2002 में हुआ है। यह पुस्तक कुल तेरह भागों में विभाजित है। यूरोप महादेश इतना विस्तृत है कि इसके बारे में विस्तार से बताना संभव नहीं फिर भी जिस देश में लेखिका ने अपने कदम रखे उसका ठोस वर्णन दिया गया है। जो आपको उससे भी ज्यादा जानने या पढ़ने को मजबूर करेगा। ऐसे तो यूरोप में बहुत सारे देश आते है मगर इस यात्रा संस्मरण में नौ देशों की चर्चा है जिसे लेखिका ने देखा, परखा और लिखा। ये नौ देश हैं- फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली (पीसा - रोम-वेनिंस- वेरोना), वेटिकन, आस्ट्रिया, जर्मनी, हॉलैण्ड बेलजियम, लंदन।

आईये मलयेशिया-सिंगापुर-थायलैंड चलें : यह लेखिका का दूसरा यात्रा वृत्तान्त जो है मांडवी प्रकाशन से प्रकाशित है। इस यात्रा साहित्य में कुल तीन भाग है। जो तीनों नाम शीर्षक में रखे गए है। वैसे तो मलयेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड किसी परिचय का मोहताज नहीं। विदेश यात्रा में रूचि रखने वाला ऐसा ही कोई बंदा होगा जिसने इन देशों की यात्रा न की हो। आप चाहे तो इस पुस्तक को गाइड बुक के रूप में व्यवहार कर सकते हैं क्योंकि वहाँ आपको घुमाने वाले गाइड खूब विस्तृत जानकारी नहीं देते। इन देशों की उन्नति की गाथा काफी रोचक है और इसे समझने में यह पुस्तक सहायक होगी। इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण पाठकों की मांग पर निकालना पड़ा जो बिना किसी विशेष बदलाव के आपके समक्ष प्रस्तुत है।

पिरामिडों के देश में : यह माला वर्मा की तीसरी यात्रा साहित्य की रचना है। यह आनंद प्रकाशन कोलकाता से सन 2006 में प्रकाशित हुई है। यह रचना पंद्रह भागों में विभक्त है। पिरामिडों का देश मिस्र (इजिप्ट) आज किसी परिचय का मोहताज नहीं। उस देश को घूमने-देखने की इच्छा किसे न होगी। इस देश से जुड़ी सभी जानकारियां जहां-तहां आपको मिल जाएगी मगर एक साहित्यकार ने इसे कैसे देखा और क्या पाया बात होगी। इसमें पिरामिड दर्शन से लेकर तूतनखामन, आसवान डैम, लाल सागर, एक रोचक काहिरा, सिकन्दरिया (एलेक्जेंड्रिया), स्वेज केनाल, तथा नील नदी पर क्रुज की बातें भी दर्ज हैं।

अमेरिका में कुछ दिन : यह लेखिका का चौथा यात्रा साहित्य का ग्रंथ है, जो आस्था प्रकाशन कोलकाता से सन 2010 में प्रकाशित है। यह रचना कुल चौदह खंडों में विभाजित है। आज का सबसे

उन्नत देश यू. एस. ए. लगभग 500 वर्ष पूर्व एक आदिवासी क्षेत्र था जहां आधुनिक सभ्यता का नामोनिशान नहीं था। इसके बाद के दिनों में कैसे क्या हुआ कि आज ये दुनिया का सबसे धनी देश व सिरमौर बना है। पर्यटन स्थलों के सैर के साथ-साथ यहाँ के इतिहास को संक्षिप्त में दर्शाती यह पुस्तक काफी रोचक व पठनीय है। आप अमेरिका जाये या न जाये वहाँ की जानकारी तो रख ही सकते हैं। इस पुस्तक में न्यूयार्क, वाशिंगटन, नियागरा, ग्रांड कैन्यन, लास वेगास, लॉज एंजेलिस, सेन फ्रांसिस्को आदि की जानकारी मिलेगी। कोलम्बस आज जिंदा होता तो अपनी इस 'नई दुनिया की खोज पर फुला नहीं समाता।

ग्रीस एंड दुबई : यह माला वर्मा की पाचवीं रचना है, जिसे मानव प्रकाशन द्वारा सन 2013 में प्रकाशित किया गया है। इसमें कुल पंद्रह खंड है। दुबई से होकर आना जाना करना पड़ा सो दुबई का जिक भी इस पुस्तक में किया गया है। दुबई में वैसे तो कुछ खास इतिहास भूगोल नहीं है, मगर एक अत्याधुनिक देश जरूर है। यहाँ दुनिया की सबसे ऊंची मीनार 'बुर्ज खलीफा' स्थित है। क्या गज़ब की कलाकारी है। हाँ, ग्रीस को इस पुस्तक में विस्तार से दिया गया है। ग्रीस का इतिहास तो यूरोप के साथ-साथ पूरे विश्व को प्रभावित करने वाला इतिहास था। इस विषय पर तो आपको सैकड़ों पुस्तकें मिल जाएगी मगर आँखों देखी कुछ ऐतिहासिक स्थलों की चर्चा हिन्दी में दुर्लभ है।

चीन देश की यात्रा : यह लेखिका का छठा यात्रा साहित्य का ग्रंथ है, जो अमृत प्रकाशन दिल्ली से सन 2011 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल पंद्रह खंडों में विभाजित है। सबसे पुरानी पाँच सभ्यताओं में एक नाम चीन का भी आता है। इस सभ्यता ने मानव को आग, कागज, मुद्रण (प्रिंटिंग), चाय, सिल्क आदि बहुत सारी चीजें दी हैं। वास्तुकला की बात करें तो दुनिया का सबसे बड़ा महल 'फॉर विडेन सिटी' तथा सबसे बड़ी दीवार 'चीन की दीवार' से आप जरूर परिचित होंगे। मगर इसके पीछे का इतिहास इतना रोचक है इसे इतिहासकार के अलावा दूसरा कोई नहीं जानता। ऐसा इसलिए कि यह ढेरों विचित्र नामों से अंटा है कि पढ़ते वक्त यह उबाऊ हो जाता है। लेखिका ने इसे सरल व रोचक तरीके से बयान किया है। इस पुस्तक में इसके इतिहास, भौगोलिक परिस्थितियाँ, चीनी सभ्यता, संस्कारों, जीवन शैली, खान-पान, उद्योगों, प्राकृतिक सौन्दर्य आदि का खूबसूरती से चित्रण है।

जॉर्डन : यह लेखिका का सातवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है, जो बोधि प्रकाशन जयपुर से सन 2016 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल बारह खंडों में विभाजित है। जॉर्डन के डेड (मृत सागर) को अधिकांश लोग जानते होंगे। ये डेड सी हजारों लाखों वर्ष पुराना है मगर आज की तारीख में जॉर्डन के मानचित्र पर

एक नया नाम उभर कर आता है और वह है पेट्रा का खंडर। अब यह है क्या, कैसे बना, किसने बनाया! इस उत्सुकता को यह पुस्तक बखूबी शांत करती है। क्रुसेड (धर्मयुद्ध) की चर्चा आपने कहीं न कहीं सुनी होगी। यह किताब जॉर्डन का इतिहास व भूगोल समेटे हुए है। मृत सागर में तैरिए और कहीं से डूबने का तनिक डर नहीं। क्यों और कैसे इस किताब में पूरी जानकारी है।

टर्की : यह लेखिका का आठवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है, जो अयन प्रकाशन दिल्ली से सन 2016 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल चौदह खंडों में विभाजित है। टर्की देश को एक किताब में बांधना असंभव है फिर भी लेखिका ने कोशिश की है। टर्की के खास स्थानों व इतिहास को संक्षेप में मगर रोचक तरीके से परोसा गया है। प्राचीन तथा आधुनिक इतिहास और ऐतिहासिक धरोहरों का फोटो सहित चर्चा हिन्दी भाषा में कहीं अन्य दुर्लभ है। टर्की यात्रा की इच्छा संजोये हो तो इस पुस्तक को जरूर पढ़े। टर्की ने दो-दो विश्वयुद्ध झेला है। उस स्थान पर खड़े होकर उस विभीषिका को याद करना - रोंगटे खड़े हो गए थे। ट्राच के ट्रोजन हॉर्स की बात करें या इस्तांबुल में स्थित खूबसूरत ब्लूमॉस्क की चर्चा हो, टर्की में हर तरफ सुंदरता भरी है। लेखिका ने देखा और भरसक सबको समेटने का प्रयास करते हुए इस यात्रा संस्मरण को लिखा है।

विश्व के 20 आश्चर्य : यह लेखिका का नौवां यात्रा साहित्य का ग्रंथ है, जो भूषण प्रकाशन कोलकाता से सन 2017 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल बीस खंडों में विभाजित है। दुनिया में आश्चर्यजनक चीजों व स्थानों की कमी नहीं है और इनकी विस्तृत जानकारियाँ अंग्रेजी भाषा में बहुत मिलती है मगर इन आश्चर्यो का हिन्दी में एक साथ वर्णन जल्दी नहीं मिलता। इस पुस्तक में प्रकृति या मानव निर्मित आश्चर्यों के साथ-साथ कुछ ऐसे 'मानवों' की भी चर्चा है जो अपने आप में किसी आश्चर्य से कम न थे। पुस्तक बहुत रोचक व संग्रहणीय है। इसमें सारे वर्णित स्थान विदेशों के है जिन्हें लेखिका ने स्वयं देखा-भाला है। इतिहास, भूगोल व हर स्थान को उसकी छवि देकर पुस्तक को अतिशय रोचक बनाया गया है।

कनाडियन रॉकीज एंड अलास्का क्रुज : यह लेखिका का दसवां यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो भूषण प्रकाशन कोलकाता से सन 2018 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल सत्रह खंडों में विभाजित है। उत्तरी अमेरिका के रॉकीज पर्वतमालाओं का अधिकांश भाग यू. एस. ए. तथा कनाडा में पड़ता है। इस पर्वतमाला के गरम प्रदेशों में केलिफोर्निया तथा कोलोरेडो के पठार और ग्रैंड कैन्यन के इलाके आते हैं जिनकी चर्चा होती रहती है। रॉकीज के ठंडे प्रदेश अपने सिने में अनंत सौन्दर्य छिपाए बैठे हैं। बर्फ, बर्फीली झील, ग्लेशियर, टूटते- बहते हुए ग्लेशियर आदि बहुत कुछ इस पुस्तक में अमेरिका का सबसे

ठंडा प्रदेश अलास्का तथा कनाडा के पश्चिमी हिस्सों की चर्चा है। इस यात्रा संस्मरण में ढेरों छवियाँ भी है जो पठन-पाठन को और भी ज्यादा रोचक बनाती है।

स्कैन्डिनेविया : यह लेखिका का ग्यारहवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अमृत प्रकाशन दिल्ली से सन 2019 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल तेरह खंडों में विभाजित है। (नॉर्वे, स्वीडेन, डेनमार्क) स्कैन्डिनेविया में चार देश आते है जिसमें नॉर्वे, स्वीडेन, डेनमार्क तथा फिनलैंड आते हैं। फिनलैंड न देखने की वजह से इस पुस्तक में फिनलैंड की चर्चा नहीं है। नॉर्वे में लाखों, करोड़ों वर्ष पुराना फियोर्ड देखिये या फिर गर्मी के मौसम में 'मिड नाइट सन् का आनन्द लें जहां सूरज भाई डूबते ही नहीं। स्वीडेन के स्टॉकहोम से प्रतिवर्ष दिये जाने वाले नोबल प्राइज के बारे में तो हम जानते ही है मगर इसके अलावा भी इन ठंडे मुल्कों में दर्शनीय ढेरों स्थल हैं जिनके बारे में विस्तार से इस पुस्तक में चर्चा की गई है। डेनमार्क की बात करें तो यहाँ विश्वप्रसिद्ध लिटिल मरमेड मौजूद है।

आइसलैंड-लैपलैंड : यह लेखिका का बारहवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो भूषण प्रकाशन कोलकाता से सन 2019 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल पंद्रह खंडों में विभाजित है। नाम सुनकर ऐसा लगता है इन ठंडे प्रदेशों में जहां सिर्फ बर्फ का ही साम्राज्य है- देखने को क्या मिलेगा ! किन्तु आपकी ये धारणा गलत सावित होगी जब प्रकृति के अजूबे कारनामे जैसे कि अरोरा वोरियलिस (नॉर्दन लाइट्स), कठोर सर्दी के बीच गरम फौव्वारे और बर्फ में छिपे सुप्त/जागृत ज्वालामुखी। इसके अलावा पृथ्वी ऊपर से नीचे दो भागों में कैसे बंट रही है इसे महसूस करना चाहे तो आइसलैंड एक सही जगह है। इस पुस्तक में बहुत सारे ऐसे ही प्राकृतिक कारनामों से सम्बन्धित मनोरंजक तथ्य है। आप वहाँ उस स्थान पर जाये या न जाये मगर पढ़कर उस देश का जायजा जरूर ले सकते हैं। बर्फ और आग उगलने वाले देश में रहते हुए भी वहाँ के स्थानीय वाशीन्दा शारीरिक व मानसिक रूप से कितने वैज्ञानिक और खुशहाल है- एक उदाहरण हैं।

जापान : यह लेखिका का यात्रा तेरहवाँ साहित्य का ग्रंथ है जो अमृत प्रकाशन दिल्ली से सन 2019 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल ग्यारह खंडों में विभाजित है। कई छोटे-छोटे टापुओं पर बसा एक छोटा सा देश जापान कितना बड़ा बड़ा काम कर सकता है इसे आप सबने महसूस किया होगा। किसी न किसी जापानी वस्तुओं का हमारे दैनिक जीवन में व्यवहार अक्सर झलकता है। जापान की उन्नति का इतिहास कोई बहुत पुराना नहीं है मगर उन्नति के शिखर पर चढ़ना पूरा देश ही आधुनिकता का प्रयोगशाला नज़र आता है। हिरोशिमा-नागासाकी और सुनामी जैसे विपदाओं व झंझावातों को झेलना यह देश मन की शांति कैसे बनाए हुए है यह भी देखने की बात है। माउन्ट फूजी और चेरीब्लॉसम फूल को एक साथ

देखना सुखद है। सीजन में जब ये फूल लाखों-करोड़ों की संख्या में खिलते हैं तब पूरी दुनिया से लाखों लोग इसे देखने आते हैं।

केन्या : यह लेखिका का चौदहवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो सदीनामा प्रकाशन कोलकाता से सन 2020 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल दस खंडों में विभाजित है। चिड़ियाखानों और जंगलों में जानवरों को उनके प्राकृतिक स्वरूप में देखना बहुत फर्क है। प्रकृति की गोद में विचरते कुछ खूंखार जानवर भी प्यारे लगते है। आपकी गाड़ी के करीब से गुजर गए और आपको देखा तक नहीं बड़ा अजीब लगाता है। और हम है कि वर्षों पहले इनका शिकार करते थे, और आज भी यह क्रूर धंधा चोरी छिपे जारी है। बहुत सारी मनोरंजक और कौतूहल भरी बातें इस पुस्तक में मिलेगी। एक ही आसमान तले तृणभोजी जानवर व मांसाहारी जीव कैसे रहते हैं। कौन किसपर भारी है, कौन किसका शोषण करता है, भूख की ज्वाला क्या होती है ये सव रोचक बातें आपको इस यात्रा संस्मरण में पढ़ने को मिलेगी। और हाँ, बंजर जमीन से पलायन कर हरे घासों की खोज में लाखों-लाखों तृणभोजी जानवरों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर अस्थायी पलायन क्या दृश्य होता है- ये भी आपको अफ्रीका के इन जंगलों में ही देखने को मिलेगा।

साउथ अमेरिका (ब्राजील - अर्जेंटीना - पेरू) : यह लेखिका का पंद्रहवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2020 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल उन्नीस खंडों में विभाजित है। फुटबॉल के चलते सुर्खियों में छाए रहने वाले देश ब्राजील, अर्जेंटीना, पेरू, उरूग्वे, परागुवे आदि साउथ अमेरिका के देश मन में एक उत्सुकता पैदा करते हैं। अब तो नये पर माचू पीचू (पेरू), क्राइस्ट द रेडिमर (ब्राजील) को विश्व के साथ नये अजूबे में शामिल किया गया है। अर्जेंटीना ब्राजील में स्थित इग्वासु फॉल भी अपने आप में एक अजूबा ही है। साथ ही अमेजन के जंगल, अमेजन नदी पर बोट क्रुज, दुनिया का सबसे भारी साँप एनाकोंडा को करीब से देखना आश्चर्य से कम नहीं। माचू पीचू जहां कभी इंका सभ्यता ने जन्म लिया था आदि बहुत सी बातों की आँखों देखी जानकारी इस पुस्तक में मिलेगी।

कम्बोडिया-वियतनाम : यह लेखिका का सोलहवां यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2021 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल ग्यारह खंडों में विभाजित है। कंबोडिया-वियतनाम कभी वृहत्तर भारत का हिस्सा हुआ करते थे या यूँ कहें कि भारतीय राजाओं के अधीन दूर-दराज के प्रदेश हुआ करते थे। यहाँ कभी हिन्दू धर्म हुआ करता था, पौराणिक हिन्दू कथा-कहानियाँ प्रचलित थी तथा कई देवी-देवताओं के मंदिर यहाँ बने थे। आज हिन्दू धर्म तो वहाँ रहा नहीं मगर मंदिरों

के भग्नावशेष तथा यत्र-तत्र भारतीय नाम देखने-सुनने को मिलते हैं। कभी पिछड़ा समझे जाने वाले ये देश आज आधुनिक बन गए हैं तथा उन्नति के राह पर अग्रसर हैं। प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत को धार्मिक यात्रा के रूप में भी देखा जा सकता है। इस पुस्तक मे कंबोडिया के लोगों के जन जीवन को भी लेखिका ने चित्रित किया है।

साउथ अफ्रीका : यह लेखिका का अठारहवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2022 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल बारह खंडों में विभाजित है। प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत मे पौराणिक विषय को आधार बनाया गया है प्रमुख रूप से गांधी जी के प्रारंभीक जीवण का चित्रण तथा भारतीयों के लिए अफ्रीका मे रहकर, उनके अधिकारों के लिए किस प्रकार के कार्य किए गए ये विस्तार से बताया गया हैं। साठ ही मंडेला के जीवन प्रसंग संघर्ष का वर्णन देखने प्रस्तुत किया गया है।

इंग्लैंड-आयरलैंड : यह लेखिका का उन्नीसहवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2023 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल चौदह खंडों में विभाजित है। इंग्लैंड-आयरलैंड' यात्रा संस्मरण में पर्यटन की दृष्टि से भारत की तुलना करती हैं। इस तुलना में व्यक्ति, समाज, देश, राजनीति, अर्थव्यवस्था, साफ-सफाई जैसे अनेक पहलू शामिल हो जाते हैं। इनकी यही चिंता इसमें दिखती है कि भारत में ऐसा कब तक हो पाएगा। अपने महल-चौबारे, कुएँ-बावड़ियाँ, नदी-पहाड़, रास्ता-घाट कब तक पर्यटन की दृष्टि से सुंदर बन सकेंगे। भारत मे ऐसी व्ययस्था कब स्थापित हो पाएगी, इसकी चिंता करती लेखिका का दृष्टिकोण पुस्तक मे देखा जा सकता है।

अंटार्कटिका - एक अनोखा महादेश : यह लेखिका का बीसवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2023 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल पंद्रह खंडों में विभाजित है। अंटार्कटिका यात्रा अद्भुत अनुभव प्रदान करती है। यहां विशाल बर्फीले चट्टानों का अनोखा सौंदर्य देखने को मिलता है। पेंगुइन और व्हेल जैसे वन्यजीवन के साथ अविस्मरणीय मुलाकातें होती हैं। वैज्ञानिक शोध करने का अवसर भी मिलता है। इस संदर्भ में भीषण ठंडे तापमान का सामना करना और खतरनाक स्थानों में अपना जीवन बचाना चुनौतीपूर्ण होता है। अंटार्कटिका की यात्रा साहसिक, शिक्षाप्रद और निडरता का प्रतीक है, जो दिलों में प्रकृति के लिए सम्मान और उसे बचाने का भाव जगाती है। प्रस्तुत यात्रा मे प्रकृति के अनेक तत्वों का वर्णन लेखिका ने किया है, जो पाठक को अंटार्कटिका घूमने के लिए आकर्षित करता है।

स्पेन-पुर्तगाल : यह माला वर्मा का इक्कीसवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2024 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल पंद्रह खंडों में विभाजित है। स्पेन-पुर्तगाल यात्रा वृत्तांत में संस्कृति, इतिहास और मानवीय अनुभवों का संगम है। माला वर्मा की सजीव भाषा और रोचक वर्णन पाठकों को यात्रा के साथ-साथ ज्ञान और प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। प्रस्तुत यात्रा वृत्तांत में कला से संबंधित परंपराओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

अज़रबैजान : यह लेखिका का बाइसवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2024 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल छः खंडों में विभाजित है। अज़रबैजान, जिसे 'आग की धरती' कहा जाता है, एक अद्भुत और सुंदर देश है जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। यह काकेशस क्षेत्र में स्थित है और इसका भौगोलिक स्थान यूरोप और एशिया के बीच एक महत्वपूर्ण पुल के रूप में कार्य करता है। कैस्पियन सागर का किनारा, हरे-भरे पहाड़, और ज्वालामुखीय भूमि के दृश्य। यहाँ के गर्म पानी के चश्मे और प्राकृतिक गैस के ज्वालामुखी इस देश की प्राकृतिक विविधता को और भी अद्वितीय बनाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में पर्यटन के स्थलों की विशेष जानकारी दी गयी है।

आर्कटिक ध्रुवीय भालू का देश : यह लेखिका का तेहसवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2024 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल तेरह खंडों में विभाजित है। आर्कटिक दुनिया के सबसे उत्तरी बिंदु 'नॉर्थ पोल' के करीब स्थित एक ठंडा क्षेत्र है। भले वहां बर्फ ही बर्फ हो लेकिन अविश्वसनीय रूप से है बहुत सुंदर जगह। यह केवल एक यात्रा नहीं बल्कि अनुभवों का एक पिटारा है। गर्मी में जहां सूरज एक पल को डूबता नहीं! और शीतकाल में सूरज दिखता नहीं। प्रस्तुत यात्रा मे लेखिका ने रोचक प्रसंगों एवं प्रकृति के तत्वों का बारीकी से वर्णन किया है।

कोस्टल इटली : यह लेखिका का चौबीसवाँ यात्रा साहित्य का ग्रंथ है जो अंजनी प्रकाशन कोलकाता से सन 2025 में प्रकाशित हुआ है। यह रचना कुल दस खंडों में विभाजित है। प्रस्तुत पुस्तक मे हर पन्ने पर आपको इटली के तटीय शहरों की रौनक, वहाँ के लोगों की आत्मीयता और स्वादिष्ट व्यंजनों की खुशबू महसूस होगी। यह पुस्तक सिर्फ एक यात्रा वृत्तांत नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो पाठकों को इटली के रंगों, खुशबुओं और एहसासों से जोड़ देगा।

माला वर्मा ने भारत के साथ-साथ विदेशों के तमाम बड़े देशों का राजनीतिक, धार्मिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक तथ्यों को अपने साहित्य में स्थान दी हैं, जो साहित्य के विकास में इनका

प्रमुख योगदान के रूप में देखा जाता है। इन्होंने अपने हर एक पुस्तक में देश-दुनिया के बारे में तुलनात्मक अध्ययन एवं पूरी जानकारी के साथ अपनी पुस्तकें लिखी हैं। निम्न स्तर के लोग एवं जो लोग विदेश यात्रा नहीं कर सकते वो विदेशों के बारे में तनिक भी नहीं जानते या जानते भी है तो सटीक जानकारी किसी के पास नहीं होती। लेकिन मैडम माला वर्मा ने अपने इन किताबों के द्वारा उन लोगों को वो सुविधा दी है जिससे वो बाहरी जानकारी जान सकें। माला मैडम ने अपने देश के सुधार के लिए ज्यादातर राजनीतिक और धार्मिक पहलुओं पर ध्यान दिया है। क्योंकि लोग इन आडंबरों के कारण अपने अस्तित्व को भूल सा गए है। जिसे दूर करना हमारे देश के लिए बहुत ही जरूरी है। अगर ये ठीक हो जाये तो हमारा देश भी विदेशों के उन आधुनिक देशों के तरह बन जाएगा, जिससे हमारे आने वाले पीढ़ी सुख-शांति और आराम से अपना जीवन जी पाएंगे और आज जैसा हमारा देश है कल एक स्वर्ग बन कर उभरेगा। माला मैडम के तरह अनेकों साहित्यकार इस विषय में अपना योगदान दे रहे हैं, उन सभी साहित्यकारों को मेरा धन्यवाद। वैसे तो माला मैडम और उनके साहित्य के बारे में जितना लिखा या कहा जाये कम है। फिर भी मैंने अपने विवेकानुसार जितना हो सका लिखा है। अंत में यही कहूँगा की माला वर्मा की लेखनी अद्भुत है। जो समाज के हर वर्ग को यात्रा करने के लिए प्रेरित करता हैं।

2.6 सम्मान : लेखिका को अब तक ढेरों सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। जो इस प्रकार से है- डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड (1998), साहित्य शिरोमणि सम्मान, प्रतापगढ़ (1999), कवि कोकिल सम्मान, हैदराबाद (1999), श्रीकृष्ण कला साहित्य अकादमी सम्मान, इंदौर (2001), गोविंदी बाई अवार्ड (2007), वरिष्ठ लघु कथाकार सम्मान 2010 (हम सब साथ-साथ, नई दिल्ली), साहित्य सुरभि-राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान 2010 (अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर), कहानी सम्राट सम्मान (जी.वी. प्रकाशन, जालन्धर 2014), कहानी विधा में विशिष्ट सेवा हेतु शब्द प्रवाह अखिल भारतीय साहित्य सम्मान (2014), उज्जैन द्वारा 'अम्मा पापा' कविता संग्रह पर 'शब्द श्री' की मानद उपाधि, भारतीय साहित्य सृजन संस्थान द्वारा "आइये मलयेशिया-सिंगापुर-थाईलैंड चलें (यात्रा संस्मरण) तथा अम्मा-पापा (कविता संग्रह) के लिए कथासागर साहित्य सम्मान, पटना (2000), डॉ. रचना निगम संपादक 'नारी अस्मिता' द्वारा अस्मिता साहित्य सम्मान 2018, साहित्य रत्न सम्मान (साहित्य कलश, पटियाला 2019), लघुकथा रत्न सम्मान-2019 (सामयिकी भीलवाड़ा, राजस्थान), 'प्रखर गूँज प्रकाशन' के तरफ से 'रत्नावली के रत्न सम्मान' (मार्च, 2020), कथा विभूषण सम्मान-2021 (श्री कमलचन्द्र वर्मा स्मृति लघुकथा प्रतियोगिता, भव्या इंटरनेशनल एवं भव्या फाउंडेशन अंतर्राष्ट्रीय मैत्री सम्मेलन जयपुर द्वारा

इंडियन बेस्टीज अवार्ड 2021, कथा दर्पण साहित्य मंच, महू, इन्दौर, मध्य प्रदेश), इंद्रप्रस्थ तूलिका स्वर्ण वात्सल्य सम्मान (2021-2022) मगसम, रचना रजत प्रतिभा सम्मान-मगसम (मंजिल ग्रुप साहित्यिक मंच) फरवरी 2023, मातोश्री स्वर्ण कमल सम्मान मगसम, फरवरी 2023, नव उदय पब्लिकेशन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'नव उदय' हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा प्रशस्ति पत्र, फरवरी 2023, संकेत एवं अनिल अभिव्यक्ति संस्था साहित्य कला एवं सांस्कृतिक मंच मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा प्राप्त लघुकथा शिल्पी सम्मान 2023, गरीफा मैत्रेय ग्रंथागार, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (गौरीपुर, उत्तर 24 परगना) द्वारा राहुल सांकृत्यायन सम्मान 2023, जैमिनी अकादमी (पानीपत हरियाणा) द्वारा विश्व हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर विश्व हिन्दी सेवी सम्मान, स्व. उमा श्रीवास्तव स्मृति पर्यटन गौरव सम्मान (2023-24, प्रणाम पर्यटन, लखनऊ), माँ हीराबेन स्मृति पुस्तकालय (जनवरी 2025, पूजा गुप्ता, मिर्ज़ापुर) द्वारा पुस्तक दानवीर सम्मान

2.7 सम्पादन/प्रकाशन/प्रसारण : भारत के सभी प्रमुख स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में कविता, लेख, लघुकथा, व्यंग्य, कहानियाँ व तथ्यपरक समसामयिक लेख आदि का अनवरत प्रकाशन, अब तक कई कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में पुरस्कृत। कई रचनाएँ संग्रहों में चयनित, आकाशवाणी कोलकाता से कई रचनाओं का प्रसारण। इत्यादि का प्रकाशन व प्रसारण हो चुका है।

सम्पादन : मध्यांतर (कविता संग्रह), चरैवेति (आनन्द प्रसाद अग्रवाल की आत्मकथा)। का संपादन लेखिका के द्वारा किया जा चुका है।

2.8 हिन्दी यात्रा साहित्य के विकास मे माला वर्मा का योगदान :

हिंदी साहित्य में जब हम गद्य विधाओं की बात करते हैं, तो वर्तमान में यात्रा साहित्य विधा एक प्रचलित विधा के रूप में अपना स्थान जमा रही है। इसे कुछ लोगों ने स्थापित किया है। कुछ लोगों ने कम लिखा है तो वह गुणवत्ता युक्त है। कुछ लोगों ने ज्यादा लिखा है, फिर भी कोई ज्यादा लिखता है, कम लिखता है, आखिरकार उससे ही लेखन कर्म बनता है।

हिंदी साहित्य में, यात्रा विधा में गिने चुने साहित्यकारों के नामों की चर्चा होती है। उनमें राहुल सांकृत्यायन का नाम बहुत बड़ा है, और उनके बाद एक दो नाम और मिलते हैं। अज्ञेय, निर्मल वर्मा ने जरुर लिखा। मगर वह यात्रा साहित्य के रूप में स्थापित नहीं है। जबकि वह उपन्यासकार के रूप में ही है। तो ऐसे बहुत

कम लेखक है, जो सिर्फ यात्रा साहित्यकार के रूप में स्थापित है। पिछले डेढ़ सौ, से दों सौ वर्षों से यात्रा साहित्य पर लिखा जा रहा है।

यात्रा साहित्य विधा पर शोधकार्य करते हुए, मेरी दृष्टि में केवल दो ही ऐसे यात्रा लेखक मुझे मिले, जिन्होंने दस से अधिक यात्रावृत्तांत लिखे हो। इस कड़ी में सबसे पहले 'स्वामी सत्यदेव परिव्राजक' है। जिन्होंने 'अमेरिका दिग्दर्शन' नामक पहली यात्रा ई.१९११ से शुरुआत करके 'मेरी पांचवी जर्मनी यात्रा' ई.१९५५ तक कुल ग्यारह यात्रावृत्तांत लिख डाले। इस पंक्ति में 'राहुल सांकृत्यायन' का भी उल्लेख करना मुझे उचित लगता है। महा पंडित राहुल सांकृत्यायन कि यात्रा पर आधारित चौदह यात्रा पुस्तकें हमें मिलती है। जिसमें सबसे पहला उनका यात्रावृत्तांत था- 'तिब्बत में सवा बरस' ई.१९३३ में शारदा मंदिर, दिल्ली से प्रथम बार प्रकाशित होता है, और अंतिम यात्रावृत्तांत उनका 'गढ़वाल परिचय' ई. १९५५ था।

माला वर्मा लगातार २१वीं शताब्दी के शुरुआत के दशक से अब तक निरंतर २५ वर्षों से यात्रा साहित्य लिखती आ रही है। वर्तमान में भी उनका लेखन जारी है। इतना सक्रिय लेखन हिंदी साहित्य के यात्रा विधा में मेरी नजर में कोई दूसरा करता हो, ऐसा मेरी नजर में नहीं आया है। माला वर्मा के चौबीस यात्रावृत्तांत अभी तक प्रकाशित हो चुके हैं। जिसमें उनकी पहली यात्रा पुस्तक 'यूरोप यात्रा संस्मरण' २००२ में प्रकाशित होती है। जनवरी २०२५ में 'कोस्टल इटली' यात्रावृत्तांत प्रकाशित हुआ है।

इन यात्रावृत्तांत का परिचय हमने आगे दिया है। कोई भी व्यक्ति होता है किसी एक विधा में उसकी रुचि होती है, किसी एक के बारे में उसकी पकड़ होती है, और वह उस विधा को समृद्ध करता है। हम हिंदी साहित्य में या किसी दूसरी भाषा में, किसी भी विधा को देखेंगे तो आपको गिने-चुने नाम मिलेंगे, जिनके कारण उस विधा की पहचान है। जैसे उपन्यास विधा की बात होती है तब हम प्रेमचंद का नाम खास लेते है। हम कह सकते हैं की, हिंदी साहित्य में एक महिला लेखिका जिन्होंने वर्तमान में यात्रा साहित्य विधा को अत्यंत समृद्ध किया। गुणवत्ता युक्त लेखन के साथ-साथ बहुत कुछ लिखा। और जब हम उनके लेखन को देखते हैं, तो बहुत ही विविधता उनके लेखन शैली में नजर आती है। माला वर्मा पर कम शोधकार्य कार्य हुआ है। वह दुनिया की नजर में नहीं आया है। लोगों ने उनके यात्रावृत्तांत को कम पढ़ा होगा। लेकिन मैं तो उन पर कार्य कर रहा हूं, मैंने उन्हें गंभीरता से पढ़ा है, और हो सकता है, हमारे काम के बाद वह दुनिया की नजर में आए। की उन्होंने किन विषयों को लेकर लिखा, कैसे विषयों को आधार बनाकर लिखा, कैसे लिखा, तब जाकर हिंदी साहित्य में लोगों को इस लेखन के माध्यम से या हमारे कार्य के बाद हो सकता है कि उनकी पहुंच थोड़ी और लोगों तक पहुंचे। मगर मेरी दृष्टि से और मैंने जितना उनको पढ़ा

है, और मैंने शोध कार्य करते हुए, हिंदी यात्रा विधा के दूसरे साहित्यकारों को भी पढ़ा है, तब जाकर मैंने यह पाया है कि, हिंदी साहित्य की यात्रा विधा को समृद्ध करने में सबसे बड़ा योगदान मेरी दृष्टि से माला वर्मा का है।

राहुल सांकृत्यायन के यात्रा लेखन में धार्मिक आयाम का विश्लेषण जिस तरीके से किया गया है, समान विश्लेषण माला वर्मा अपनी यात्रा लेखन में करती है। और अज्ञेय जिस तरह से अपनी रचना में प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण करते हैं, समान प्रकृति वर्णन माला वर्मा के यात्रा लेखन में भी देखने को मिलता है। लेखिका प्राकृतिक आयाम का चित्रण रोचक ढंग से प्रस्तुत करती है। इसके अलावा माला वर्मा जिस किसी देश में जाती है, वहां के इतिहास का वर्णन बहुत ही बारीकी से सैकड़ो पृष्ठों में करती है। क्योंकि उनके पास लिखने के लिए इस विधा को छोड़कर कुछ नहीं है। और दूसरी कारण वह सिर्फ यात्रा साहित्य में ही उनकी रुचि है। उनकी तमाम पुस्तकों में हम देखेंगे अगर किसी चीज का वर्णन आ रहा है, तो वह बहुत विस्तार से उन्होंने एक-एक चीज को इतनी विविधता से लिखा है। जिन लेखकों ने यात्रा साहित्य को किसी डर के वजह से विधा नहीं बनाया। उपन्यासकार और कवि के रूप में ख्याति पायी उनकी भी यात्रा की एक दो पुस्तकें हैं। लेकिन उनकी चर्चा कम होती है। उनको यात्रा साहित्य, या यात्रा साहित्य लेखक बनने से हो सकता है कि, उनको लगा हो कि कोई पहचान नहीं मिलेगी। कविता और उपन्यास विधा बहुत समृद्ध विधा है। मगर इसके बावजूद कुछ लेखक ऐसे हैं। हो सकता है की, माला वर्मा जैसे दूसरे और लेखक जो आज वर्तमान में लिख रहे हैं, और नए-नए लोगों तक यात्रा साहित्य की पहुंच को बढ़ा रहे हैं। ऐसा भी संभव है कि, आज से दो-तीन, चार-पांच, दस-बीस, वर्षों के बाद हिंदी साहित्य में जब यात्रा साहित्य लेखन की बात होगी तब माला वर्मा की चर्चा ही अधिक होगी। और जो नयी पीढ़ी के लोग हैं, जो इस विधा में लिखना तो चाहते हैं, लेकिन लिख नहीं रहे हैं। और फिर बार-बार घूम-फिर कर उपन्यास और कहानी विधा पर जा रहे हैं। ऐसे लेखकों के वजह से माला वर्मा को भी यात्रा साहित्य विषय पर लिखने की रुचि होगी। यह माला वर्मा का योगदान है। जो आने वाली पीढ़ी को प्रोत्साहित करने का कार्य करेगा, की यात्रा विधा में भी साहित्य रचा जा सकता है। और कितना भरपूर लिखा जा सकता है, बेहतरीन किताबें लिखी जा सकती है। माला वर्मा ने इस क्षेत्र में अग्रिम योगदान दिया है, जो आने वाले समय में साहित्य जगत के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

2.9 माला वर्मा का साक्षात्कार :

प्रश्न- गद्य साहित्य की अनेक विधाएं है, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, रिपोर्ताज, आत्मकथा, आपने लेखन के लिए यात्रा साहित्य को ही क्यों पसंद किया ?

उत्तर- ऐसी बात नहीं कि मैंने सिर्फ यांत्रा साहित्य के ऊपर ही कलम चलाई है। यात्रा वृतांत के अलावा मेरी अब तक 9 कहानी संग्रह, 5 कविता संग्रह, 5 लघुकथा संग्रह आ गई हैं। यात्रा के ऊपर कुछ ज्यादा किताबें हैं जो मुझे इसी विधा मैं प्रतिष्ठित कर गई. हो, आज की तारीख तक मेरी 26 यात्रा वृतांत पर किताबें प्रकाशित हो गई है। इसके आलावा दो किताबों का संपादन भी किया। इस एक जिंदगी मे मुझे नहीं पता आगे और कितनी यात्रा करनी है, कितनी किताबें आयेंगी ? बस रुकना नहीं है। थकना नहीं है।

देश-विदेश घुमते वक्त हठात् मन में ख्याल आया - जो देख रही हूँ, सुन रही हूँ उसे अपने तरीके से कलमबद्ध करूं। इस विधा के लिये मैं राहुल सांकृत्यायन का नाम लूंगी जिनकी किताबें पढ़कर मेरे अन्दर भी इच्छा जागी कि अपने भ्रमण को कलमबद्ध करूं। ऐसा सभी नहीं करते हैं। फिर भी बहुत लोग हैं जो यात्रा संस्मरण लिखने में अपना नाम प्रसिद्ध कर गए। मैंने एक बार लिखना शुरू किया तो फिर आदत बन गई। हर यात्रा के बाद एक नई किताब का जन्म होता गया। लोगों ने पसंद किया, और मेरा उत्साह बढ़ना गया। सच कहती हूँ जितना आनंद भ्रमण के दौरान होता है, उससे डबल खुशी लिखने के वक्त होती है। लगता है उस स्थान पर दुबारा विचरण कर रही हूँ। यात्रा संस्मरण लिखने के दौरान अपनी जानकारी भी बढ़ती है। उस स्थान का इतिहास, भूगोल जानने को मिलता है। जब कोई मुझसे पूछता है तो मैं उसे विस्तार से समझा पाती हूँ। भूगोल जानने को मिलता है. गर कोई मुझसे पूछता है तो मैं उसे विस्तार से समझा पाती हूँ। भ्रमण करने का मतलब है, अधिकाधिक रोचक जानकारी का प्राप्त होना। महत्वपूर्ण घटनाओं से वाकिफ होना। वहाँ की संस्कृति, पहनावा, खानपान, बात व्यवहार सबसे हम रूबरू होते हैं। व्हॅनसांग, फ़ाहियान, मार्को पोलो, वास्कोडिगामा जैसे अनगिनत लोगों ने यात्राएं की, उन पर कलम चलाई तब जाकर हमें इतनी जानकारियां मिली। वैसे आज तो गूगल महाराज घर बैठे सब उपलब्ध कर देते है। इन दिनों यात्रा साहित्य पर बहुत लोग कलम चला रहे हैं। चर्चित भी हो रहे हैं। अच्छी बात हैं, कविता, कहानी तो कोई भी लिख सकता है, लेकिन यात्रा साहित्य कम ही दिखता है।

प्रश्न- यात्राएं करने की प्रेरणा आपको कहा से मिली ?

उत्तर- इसके लिए मेरे प्रेरणा स्रोत हैं, मेरे पापा डॉक्टर विरेन्द्र मोहन सिन्हा जिन्हें डॉ. रमणी बाबू के नाम से भी जाना जाता था। मेरे पापा आरा (भोजपुर-बिहार) के मशहूर नेत्र चिकित्सक थे। अब पापा नहीं रहें लेकिन हम भाई बहनों के साथ वे अक्सर मेडिकल कोन्फ्रेंस मे निकलते थे। और उसी समय से यात्रा करने की धुन मन मे समा गई। तब हम भारत की ही यात्रा करते थे। कश्मीर, दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेष, कोलकाता आदि का भ्रमण शादी के पहले ही कर लिया था। और उसी दौरान 'स्विट्जरलैंड' देखने का भूत मेरे सिर पर सवार हो गया था। कि चाहे जो हो, जैसे हो मुझे वो देश देखना ही है। और ये मौका शादी के पूरे 23 वर्ष बाद सन 1999 में मिला, जब युरोप यात्रा पर निकली। बचपन का सपना पूरा हुआ और अब तो दूसरी बार स्विट्जरलैंड (मई 2025) हो आई। मेरे पापा एक बाद मेडिकल कॉन्फ्रेंस के सिलसिले मे यूरोप घूम आए थे। तब वो अकेले गए थे। परिवार का कोई सदस्य नहीं। तब ही ठाना था जब पापा यूरोप जा सकते हैं, तो फिर उनकी बेटी क्यों नहीं ?

आखिर उनका खून ही मेरे अन्दर दौड़ रहा था। यही जिद, यही जुनून मुझे इस मुकाम तक ले आया। मेरे डॉक्टर पति, दुर्गादत्त वर्मा जी को भी इतिहास भूगोल से बहुत लगाव है, तो अपनी जोड़ी सेंट हो गई थी। भारत अब तफ 90% देख लिया है, अब विदेश यात्रा है।

पापा ने सूत्रपात कर दी थी। इसके अलावा परिवार व कई मित्र ऐसे थे, जो विदेश यात्रा करने और आकर अपना अनुभव सुनाते। हिन्दी फिल्मों में कुछ गानों की शूटिंग विदेशी स्थल पर होती थी। फिल्म देख कर बेकरारी बढ़ जाती। 'लव इन टोक्यो' फिल्म देख कर जापान भ्रमण की इच्छा हुई थी। लेकिन ये मौका, मुझे बहुत देरी से मिला, और उन स्थानों को देखा जहां उस फिल्म के गीत फिल्माएं गये थे। बता नहीं सकती कि उस जापान भ्रमण के दौरान मेरी क्या अनुभूति थी। कभी सोचा न था जहां जॉय मुखर्जी - आशा पारिख (हीरो-हीरोइन) ने गीत गाये थे वहां कभी एक छोटे शहर से निकली महिला पहुंच सकती है। वो जुनून अभी तक बरकरार है घूमने का।

प्रश्न- साउथ अमेरिका यात्रा संस्मरण में आप लिखती है कि, "चाहे जितना घूम लूँ, पढ़ लूँ, जान लूँ, फिर भी लगता है, यह सब इस एक जिंदगी के लिए एक बूंद समान भी नहीं और आँखों के सामने पूरा समुद्र हहरा रहा है।" आपकी नजर में दुनिया के वह कौन से स्थान है जहां जाना अभी भी शेष रह गया है ?

उत्तर- इस प्रश्न के संदर्भ मे तो यहीं कहना चाहूँगी की,एक मानव जीवन कितना बड़ा हो सकता है। मैंने इतना कुछ अब तक देखा, घुमा फिरा, फिर भी लगता है कि इस पूरी दुनिया को देखने के लिए एक नहीं कई जन्म लेने होंगे। जितका देखती हूँ प्यास बढ़ती जाती है। कुछ दिनों का प्रवास उसमें जी कहां भरता है। कोई सफर खत्म करके वापसी करती हूँ, तो हिसाब-किताब बैठाती हूँ। और फिर जो देखा उसके लिये खुशी नहीं बल्कि जो स्थान देखने से चूक गई उसके लिए अफसोस तारी हो जाती है। हर यात्रा के अंत में यहीं होता है। मन को समझाती हूँ कि जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लूं। बहुत कुछ है इस दुनिया में देखने के लिए और इस एक जीवन में सब पा लेना संभव ही नहीं, असंभव है। कुछ ख्वाइशों का अधूरा रहना ही ठीक है। जिन्दगी जीने की चाहत तो बनी रहती है। 'आउथ अमेरिका' भ्रमण के दौरान इतना कुछ अनूठा, आश्चर्यजनक स्थान देखने को मिला कि हम दंग थे। एक इस टूर में दुनिया के तीन आश्चर्य देखने को मिला था- रियो डी जेनिरो, माचू-पीचू और इग्वासु फॉल। साथ में अमेजन जंगल मे एकाध घंटे सैर, लाल रंग का झरना और अमेजन नदी में कई बार नौका विहार। अमेजन दुनिया की दूसरी सबसे लंबी नदी है। पहले नम्बर पर नील नदी आती है। लेकिन बाढ़ के मौसम में अमेजन की लम्बाई और पानी का आयतन दोनों बढ़कर नील नदी को पीछे छोड़ देते हैं। कुछ दिनों की यात्रा में तीन देशों ब्राजील, अर्जेंटीना, पेरू को खूब अच्छे से देखना संभव था क्या ? इतना कुछ देखने के बाद भी यही लगा कि ये तो 'एक बूंद' के बराबर भी नहीं था। और सामने समुद्र हहरा रहा था। काश एकाध महीने का टूर होता। जो देखा उस दौरान अविश्वसनीय था। आज भी विश्वास नहीं होता, कि मैं क्या देख आई थी! और हां इस अमेजन के घने जंगलों में घूमते वक्त मैंने साड़ी पहनी थी। ग्रुप के कई लोगों ने आश्चर्य से कहा था- "अमेजन के जंगल में आजतक किसी ने ऐसा ड्रेस पहन कर भ्रमण नहीं किया होगा, ये बात तो गिनीज बुक में जाना चाहिए।" वाकई अब सोचकर मुझे खुद आश्चर्य लगता है। उस वक्त चुस्त-दुरुस्त टाइट कपड़े पहनने की बात थी, ताकी जहरीले कीड़े-मकोड़ों से बचाव हो सके। किन्तु मुझे तो 'साड़ी' पहनावा ही भाता है। जब तक कि कोई खास वजह न हो। इस बात को क्या कोई गिनीज बुक वाले सुन रहे हैं। दुनिया में सबसे ऊंचाई पर स्थित मीठे पानी की झील 'टिटिकाका' भी तो देखने को मिला। पानी का स्वाद लिया। सचमुच बहुत मिठास थी। 'माचू-पीचू' पेरू के पहाड़ों पर बसा हुआ एक खंडहर जो इंका सम्भ्यता का प्रतीक है। इतनी ऊंचाई पर बना एक राजमहल का खंडहर, जिसे देखने के लिए दुनिया भर से लोग आते हैं। बहुत मेहनत है पहाड़ों पर, ऊपर नीचे चलते हुए इन अवशेषों को देखना। जब तक आपके अन्दर जोश नहीं, जुनून नहीं आप थक जायेंगे। साउथ अमेरिका जब घुम कर वापस आई तो कतई विश्वास नहीं हो रहा था कि आखिर हमने ये क्या देख लिया! असंभव को संभव बनाया था। यात्रा काफी महंगी थी, और लंबी भी। लेकिन

घूमने के बाद लगा कि पैसे वसूल हो गये। इसलिए कभी कभी सोचती हूँ, जिस उम्र में जो करने का मन हो, वो उसी उम्र में कर लेना चाहिए। वरना जिन्दगी में 'काश' बढ़ जाते हैं।

इस प्रश्न का जो दूसरा हिस्सा है, उसके बारे में कुछ लिख दूँ। सागर भाई आपने पूछा है- दुनिया के वो कौन से स्थान हैं जहां मेरा जाना अभी शेष हैं। तो यहां बता दूँ। इस दुनिया मे टोटल 195 देश हैं। और उन देशों को घूमने, देखने के लिए अपनी व्यक्तिगत पसंद व रुचि भी आड़े आती है। कई देश ऐसे हैं, जो ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, तो कई ऐसे हैं जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, संस्कृति, अड्वान्स इमारतों आदि के लिए प्रसिद्ध हैं। और मेरी रुचि इन सब में है। मुझे दुनिया के वो सात आश्चर्य भी देखने हैं। सात समुन्दर पार भी जाना है। सातों महाद्वीप पर कदम भी रखना है। और यहां यह भी लिख दूँ कि, मैं अपने आपको इस मामले में भाग्यशाली समझती हूँ, कि मैंने दुनिया के सातों महादेश - एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, युरोप, आस्ट्रेलिया व अंटार्कटिका (साउथ पोल) की धरती पर टहलकदमी कर ली है। साथ ही पांच महसागरों की लहरों पर भी घूम आई। ये पांच महासागर हैं- प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, आर्कटिक महासागर और अंटार्कटिक महासागर या कह लीजिए दक्षिणी महासागर। महासागर तो पांच ही है, बाकी महा को हटाकर सिर्फ सागर (समुन्द्र) की बात करें तो उनकी संख्या अनगिनत हैं, और इनमें से अधिकतर को देख चुकी हूँ। उनकी तेज लहरों से लेकर शांत लहरों तक का अनुभव मिला है। यहां प्रकृति को नमन करना चाहूंगी- इस धरती को उसने कितना सजा-संवार कर रखा है। वो हर चीज हमें प्रदान की है, जिसके बिना मानव जीवन, जीव-जंतु, गाछ-बिद्द सबका जीवित रहना असंभव था। एक सैल्यूट प्रकृति को देना होगा। प्रकृति है तो हम है। उसकी दया पर हम जीवित हैं। तो हमारा फर्ज है कि हम भी अपनी प्रकृति, अपनी नदियों को, पहाड़ों को संभाल कर रखें। उन्हें नष्ट न करें, प्रदूषण मुक्त रखें। प्रकृति को नष्ट करना उसके साथ अन्याय है। यहां एक बात का और उल्लेख करती चलूं- यह मेरी हॉबी है, मैं जहाँ जिस देश में घूमने जाती हूँ, अपने क्लेक्शन के लिये उस देश की खास नदी, झील या महासागर या सागर का पानी छोटे बॉटल में सील करके लाती हूं। और किसी खास जगह की मिट्टी, पत्थर, बीज आदि भी। इसे आप मेरा जुनून-पागलपन कुछ भी कह लीजिए। सैकड़ों वस्तुएं मेरे पास संग्रहीत है। चाहे नील नदी का पानी हो या अमेजन या लेक टिटिकाका या फिर सात महासागरों का जल। मेरी आलमारी के एक रैक पर सुशोभित है।

मूल प्रश्न से थोड़ा भटक गई थी। अब तक अति विशिष्ट स्थानों को देख लिया है। इसमें शामिल हैं, अंटार्कटिका (आउथ पोल) और आर्कटिक (नॉर्थ पोल) यानी अपनी इस धरती के दोनों छौर पर से आई।

ऐसा रोमांच कभी महसूस नहीं किया था। वो मीठी बर्फीली हवा की छुअन कैसे भूल सकती हूँ! वहां कई दिनों तक घूमती रही लेकिन तनिक विश्वास नहीं हो रहा था, कि आखिर मैं किस धरती पर विचर रही हूँ।

अब तक मैंने 55-60 देश घूम लिये हैं, और कई देश दुबारा से देखना पड़ गया। उन अबको फिर से काउंट करू तो संरख्या 70 को पार कर जायेगी। सभी देश जी मैंने देखें हैं, वो अपनी हरी-भरी वादियों, ऐतिहासिक स्थलों, उत्तम शिक्षा प्रणाली, प्राकृतिक सुन्दरता, खूबसूरत पहाड़ों, विंटर स्पोर्टस, उच्च जीवन स्तर के लिए, अपनी संस्कृति, कला विशेष, एडवेंचर स्पोर्टस, पर्यावरण संरक्षण, विनम्रता, भाईचारा, स्वच्छता, ध्वनि प्रदूषण मुक्त बातों के, लिए प्रसिद्ध है। इन सब देशों का नाम यहाँ लिखू तो एक लंबी लिस्ट बन जायेगी। अभी कुछ महीने पहले 'फिलीपींस' (फरवरी 2025) देश घूम आई। एक छोटा सा देश इतना सम्पन्न, इतना सुन्दर, साफ-सुथरा, प्रदूषण मुक्त, लोगों की सदाचारिता आदि देख हम दंग थे। आठ दिनों की यात्रा में हमने एक बार भी किसी गाड़ी का हॉर्न तक नहीं सुना ! और स्वच्छता, स्थानीय लोगों की विनम्रता देख आश्चर्य में थे। उस वक्त सचमुच अपने भारत की याद आती है। हम कई स्तरों पर बिल्कुल फेल हैं।

मेरे बकेट लिस्ट में अभी भी कई देश ऐसे हैं जिनको मैंने नहीं देखा है। लेकिन उम्मीद है कि, आने वाले कुछेक वर्ष में कुछ मनचाहा देश देख ही लूंगी। अगली यात्रा स्विट्जरलैंड (दुबारा) की है। फिर रशिया (रुस) और साइबेरिया (मंगोलिया) है। उसके बाद न्यूजीलैंड और एक छोटा फैमिली गेट-टुगेदर दुबई में करने का प्लान है। यानी फरवरी 2026 तक की ये लिस्ट है। अगले वर्ष कुछ और नये देश जुड़ने वाले हैं। श्रीलंका, मालदीव, इंडोनेशिया (बाली), ग्रीनलैंड, सेन्ट्रल एशिया, मेक्सिको आदि-आदि कई ऐसे देश। घूमना, देखना है तो फिर लौट कर लिखना भी होगा। यहां डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की कही बात याद आ रही है, "अगर मरने के बाद भी जीना है तो, एक काम जरूर करना, पढ़ने लायक कुछ लिख जाना या फिर लिखने लायक कुछ कर जाना" उस महान राष्ट्रपति को नमन हैं।

प्रश्न- आपकी विदेश यात्राओं में भारतीयता के तत्व गहराई से जुड़े हुए नजर आते हैं। इन तत्वों की झलक आपके लेखन में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। क्या कारण है कि, आप भारतीय संस्कृति, भारतीय समाज, का वर्णन करना नहीं भूलते ?

उत्तर- अपने देश से किसे प्यार नहीं होता। विदेश घूमते हुये भारत हमेशा याद आता है। कभी अच्छी बातों के लिए याद आता है, तो कभी इसकी कमियों को देख दुख होता है। मेरी हर यात्रा वृतांत में कुछ

ऐसे मुद्दे शामिल होते हैं, जिनकी चर्चा जरूरी हो जाती है। विदेशी स्थालों पर घूमते हुए वहां की साफ-सफाई, कायदा-कानून, लोगों का बात-व्यवहार ये अब अचंभित करता है। सबसे पहले तो मैं स्वच्छता की बात करूं, दूसरे देशों में इस बात को सरकार, वहां की जनता कैसे मेन्टेन करती है। हमें हर जगह साफ-सफाई, सुन्दरता क्यों दिखती है ? इसलिए कि वहां की सरकार जागरूक है। वहां की जनता स्वच्छता का महत्व समझती है। आम पब्लिक अपने शहर को कैसे साफ रखा जा सकता है, इसके लिए प्रतिबद्ध है। जापान का बच्चा-बच्चा जानता है कि स्वच्छता क्या है, और उसे कैसे मेन्टेन किया जाता है। जापान घूमते हुए हम दंग थे- कोई देश इतना स्वच्छ सुन्दर कैसे हो सकता है।

विदेशों में हमें कई बार चर्च और मस्जिद में प्रवेश करने का मौका मिलता है। हमारे लोकल गाइड हमें पहले ही आगाह कर देते हैं कि, तनिक शोरगुल नहीं, आवाज धीमी रख कर बात करनी है, और पहनावा शालीन होना चाहिए। न शोरगुल, न हीं बेवजह का चढ़ावा, धूप लोबान। बड़ी शांति से प्रवेश कीजिए और देख सुन कर इन धार्मिक स्थलों से बाहर निकल जाये। हमारे भारत के किसी मंदिर में यह दृश्य संभव है ? बाहर-भीतर दोनों तरफ बेवजह हलचल, शोरगुल व गंदगी दिखेगी। धर्मस्थल न होकर जैसे कोई हाट-बाजार। इन सब स समस्यायों की ओर अंगुली उठाइये तो कई बार सुनने में आता है कि, भारत की आबादी बहुत ज्यादा है, इसीलिए मेन्टेन नहीं हो पाता है। तो चीन देश की आबादी के बारे में क्या ख्याल है। चीन में करोड़ों करोड़ों लोग वास करते हैं। और उन्होंने अपने देश को कितना सुन्दर सजा-संवार कर रखा है। चीन देश को मैंने करीब से देखा है और दंग रह गई। दो महीने पहले (फरवरी 2025) 'फिलीपींस' घूमने गई थी। एक छोटा देश कितना उन्नत, कितनी सुन्दरता भरी पड़ी है, और उतनी ही स्वच्छता हर तरफ थी। अगर अपने देश को प्यार करते हैं, तो ये आपका कर्तव्य है कि, अपने शहर, देश को साफ रखें। लेकिन हमारे भारत में सर्वत्र इसका अभाव है।

वैसे हमारी भारतीय संस्कृति की तुलना नहीं। भारतीय साहित्य हो या भारतीय संगीत इस मायने में हम सर्वश्रेष्ठ हैं। इस बात की चर्चा मैं प्रायः अपने यात्रा वृतांत में करती हूँ। मुझे याद है 'अंटार्कटिका' सफर के दौरान रोजाना शाम को हम भारतीय मंडली एक संग बैठते और गीत-संगीत, साहित्य पर चर्चा होती। अंताक्षरी खेलने और हिन्दी-बंगला गीतों की धूम मचती। एक शाम हमने 'प्रेमचंद' के ऊपर चर्चा करके गुजारी। चूंकि मेरी हर यात्रा कोलकाता से शुरू होती है तो स्वाभाविक है मेरे सभी सहयात्री बंगाली होते हैं। और 'प्रेमचंद' के ऊपर गोष्ठी जमी थी। कितनी सुखद बात थी। प्रेमचंद की रचनाओं का बंगला अनुवाद हुआ है। और सहयात्रियों ने पढ़ा था। अपने हिन्दी साहित्य से लेकर बंगला साहित्य में एक से

बढ़कर एक धुरंधर साहित्यकार हूएं हैं, और इनकी रचनाओं की सानी नहीं है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम से कौन अन्जान है। पूरी दुनिया में विख्यात है और इनकी मूर्ति कई जगह देखने को मिलेगी। यानी किसी न किसी बहाने विदेश यात्रा के दौरान हमारा भारत, हमारे साथ होता है।

यहां एक रोचक बात की चर्चा कर दूं। जब बात भारतीय संगीत की हो रही है। तो अंटार्कटिका भ्रमण के दौरान हमें वहां के कई द्वीपों पर उतारा गया था। और एक दिन जाने मेरे मन में अचानक से क्या भाव उमड़ा और मैंने 'अंटार्कटिका' (साउथ पोल, सातवां महादेश, पेंगुइन का देश, वाइट कॉन्टिनेंट) की धरती पर अपनी भोजपुरी भाषा (मैं मूलतः भोजपुर बिहार, आरा की रहने वाली हूँ) मैंने एक गीत गाया। उसके बाद एक गीत हिन्दी और फिर बंगला गीत भी एक सहयात्री के साथ गाया। 'जन गण मन' के साथ हमने 'वेदे मातरम' भी गाया। और उस धरती को अपने गीतों से गुंजीत किया। विदेशी लोग हमें दत्तचित होकर सुन रहे थे। कहते हैं आवाज कभी मरती नहीं। वो युगों-युगों तक हवा में घुली मिली रहती है। सो मैं अपनी आवाज उस सातवें महादेश की फिजाओं में छोड़ आई। क्या पता सैकड़ों वर्ष बाद कभी कोई भारतीय पर्यटकों का जत्था वहां पहुंचे और मेरी आवाज, मेरे गीत फिजाओं में गूंजने लगे। अंटार्कटिका सफर के दौरान मैं रोजाना की आपबीती, डायरी लिख कर फेसबुक पर पोस्ट करती थी। वाई-फाई की सुन्दर व्यवस्था थी। मेरे एक साहित्यकार मित्र ने मुझे फेसबुक पर सुझाव दिया था। "माला जी वहां की धरती पर कुछ बोल आइयेगा, आवाज मरा नहीं करती, वो अनंत काल तक हवा में तैरती रहती हैं।" उनके लिखने, सलाह देने के पहले ही मैं कई गीत वहां गा चुकी थी। इसके अलावा हम भारतीयों की आपस की बातचीत, हंसी आदि भी वहां की फिजां में दर्ज हो चुकी थी...

क्या पता वहां की बर्फ पिघले, जीव जंतु, हवा बतास, आसमान मे सूरज छ महीने के लिए लगातार चमकता रहे। उस दौरान हमारी आवाज, हमारे गीत वहां की मिट्टी में अचानक से पनप, हमारे गीत गुनगुनाने लगे। इस जीवन में कुछ भी असंभव नहीं है। हां, उस दृश्य, उस आवाज को भले मैं न सुन सकू लेकिन को बिखरेगी जरूर।

तो इस तरह मेरा भारत, मेरे हर यात्रा में, मेरे साथ रहता है। और हां तुलनात्मक अध्ययन तो हमेशा चलता रहता है। कुछ मामलों में हम आगे हैं तो कई पड़ाव ऐसे है जहां पर हमें जागरूक होना पड़ेगा। अगर आपको अपने देश में पर्यटकों की आमद चाहिए तो हमें अपना इन्फ्रास्ट्रक्चर दुरुस्त करना होगा। टॉयलेट्स, वॉशरूम की सुध लेनी होगी। पब्लिक प्लेस हो या एयरपोर्ट हम दूसरे देशों की तुलना में पीछे हैं। खास कर साफ-सफाई, जिसके लिए मुझे कई बार बहसाबहसी, शिकायत तक दर्ज करानी पड़ी है।

अगर इन बातों को विस्तार दूं तो कई पन्ने रंगने पड़ जाएंगें। मेरे यात्रावृतांत में इसकी चर्चा है। हां, मैं अपने भारत को प्यार करती हूँ, सम्मान देती हूँ, तभी इन सारी बातों के लिए चिंता करती हूं। छोटी-छोटी बातें हैं, फिर भी हम समझ नहीं पा रहे हैं। हम हर तरह से समृद्ध हैं, फिर भी जाने क्यों कई मुद्दों पर हम पीछे हो जाते हैं।

प्रश्न- 'यात्राएं' वर्तमान समाज को किस हद तक अभिव्यक्त करने में सफल हुई है, आपकी इस विचार पर क्या राय है ?

उत्तर- यात्राएं अगर कोई नहीं करता तो आज न जाने हम कहां होते। कूप मंडुक सी जिंदगी होती। हम अपने पड़ोसी देश को ही नहीं देख-समझ पाते। यात्राएं चाहे अपने भारत देश की हो या विदेश की हो, वर्तमान समाज को अभिव्यक्त करने में काफी हद तक सफल हुई हैं। अगर यात्राएं न होती तो हम दुनिया भर में फैले विभिन्न संस्कृतियों, सामाजिक पृष्ठभूमि और ढेरों देश को कैसे जानते। आज यात्राएं हो रही हैं, लोग अपना अनुभव लिख रहे हैं। कमी-बेशी को साझा कर रहे हैं। तभी तो आप घर बैठे सारी जानकारी प्राप्र कर रहे हैं। उनसे जुड़ रहे हैं। उन्हें जानने की ललक बढ़ रही है, और इसमें सबसे बड़ा योगदान 'यात्रा वृतांत' लिखने वाले लेखक, लेखिकाओं का है। उन्होंने अपने अनुभव लिखें और आपने पढ़ा। भले उन जगहों पर जाने का मौका आपको ना मिले, लेकिन आप घर बैठे उसे स्थान का ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्व की बातें जान सकते हैं। इस योगदान के लिए उनकी प्रशंसा करनी चाहिए। इन यात्राओं में अनुभव के साथ साथ समाज की वास्तविक तस्वीर पेश होती है। यात्रा साहित्य लिखने का कार्यभार कभी पुरुष लेखकों ने संभाल रखा था। मुझे जब भी मौका मिला, मैंने उन्हें खूब पढ़ा और आश्चर्यचकित होती। फिर मेरे मन में भी ख्याल आया कि, क्यों न मैं भी इस विधा को, यात्रा साहित्य को आगे बढ़ाने का बेड़ा उठा लूं। और यही छोटी सी ख्वाहिश अब जुनून बन गया है। किसी भी यात्रावृत्तांत को रचते समय मैं स्वयं समृद्ध होती हूं, और बाद में उसे पढ़ने वाले। जैसा कि मैं सोचती हूं। छोटी-बड़ी, चाहे अपना देश हो, पड़ोसी देश या फिर ऊंची छलांग विदेशों की। यात्राएं आपके व्यक्तित्व को बदल देती है। यात्रा के दौरान हमें खुद को भी जानने समझने का मौका मिलता है। कभी कभार कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। बाधा कब कैसे किस रूप में आपके सामने आ जाए, नहीं मालूम होता। उस वक्त आपकी धीरजता, आपका संयम, मनोबल काम आता है। यात्राएं हमें स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और ढेर सारी खट्टी-मीठी बातों का खजाना सौंपती है। यात्रा माने, आप अपने को पहचान रहे हैं।

प्रश्न- आपकी 'जापान यात्रा' रोचकता से भरी नजर आती है, दुनिया के अन्य लोग जापान से क्या सीख ले सकते हैं ?

उत्तर- हां, जापान को देखना, उसकी धरती को महसूस करना, यह मेरा स्वप्न था। सुना था जापान घूमना बहुत महंगा है, लेकिन लोग आज डबल खर्चा करके जापान जा रहे हैं। जापान देखना है, तो देखना है। जापान सन 2018 के मार्च महीने में गई थी। उस वक्त वहां चेरी ब्लॉसम के फूल खिलते हैं, और उसे देखने ही हजारों-लाखों की संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। मार्च अप्रैल मई तक ये फूल खिलते हैं। और इस दौरान टूरिज्म डिपार्टमेंट के मजे-मजे हैं। घूमने के शौकीन लोगों को मैं ये कहना नहीं भूलती की एक बार जापान दर्शन जरूर कीजिए। ऐतिहासिक, भौगोलिक और प्राकृतिक सुंदरता जापान में भरी है। जापान से हम बहुत बहुत कुछ सीख सकते हैं। जापान ने तकनीकी उन्नति में उल्लेखनीय प्रगति की है। जापान की शिक्षा प्रणाली को दुनिया भर में एक मॉडल के रूप में देखा जाता है। छात्रों में अनुशासन, कड़ी मेहनत और समाज में रहते हुए उसकी उन्नति के लिए सोचना उनके डी.एन.ए मे हैं। जापानी कार्य संस्कृति में, कर्मचारियों की निष्ठा, अनुशासन और टीमवर्क पर जोर दिया जाता है। यहां किसी चीज में गुणवत्ता से खिलवाड़ नहीं किया जाता है। लोग इमानदार है, बेईमान नहीं।

यहां सामाजिक एकता की मिसाल दी जाती है। जापानी अपने आप को लगातार आगे बढ़ा रहा है, जो यहां के व्यवसाय और व्यक्तिगत जीवन पर भी प्रभाव डालता है। जापान देश के लोग अपने सुंदर स्वभाव, अच्छे बर्ताव के लिए जाने जाते हैं। यहां के लोग समय के पाबंद है। यहां घंटे, मिनट का नहीं, बल्कि सेकेंड्स का ख्याल रखा जाता है। और पूरा जापान इतना साफ सुथरा है कि, उसकी तुलना कम से कम अपने भारत से नहीं कर सकते। समय की प्रतिबद्धता क्या होती है, कोई जापान से सीखें। मुझे याद है, इस पूरे जापान यात्रा में हमने पांच बार बुलेट ट्रेन की सवारी की। एक बार कुछ सेकेंड के लिए ट्रेन अपने गंतव्य स्थान पर देरी से पहुंची, और यात्री गणों से बार-बार माफी की उद्घोषणा हुई। हम अपने देश में ऐसी बात कभी भी सोच सकते हैं ? ट्रेन 24 घंटे लेट हो जाए, ट्रेन कैंसिल हो जाए, यह आपका दुर्भाग्य है। कहीं कोई माफी मांगने वाला, कारण बताने वाला सामने नहीं आएगा।

बुलेट ट्रेन के इतिहास में रिकॉर्ड है कि, जब से बुलेट ट्रेन पटरी पर चल रही है, आज तक एक बार भी दुर्घटना नहीं हुई है। इसी बात से आप अंदाजा लगा लीजिए कि, तकनीकी दृष्टि से जापान पूरे विश्व में नंबर वन पर है। हमारे भारत में तो ट्रेन दुर्घटना आम बात है। सुनामी के बाद भी जापानी लोगों ने बड़े धैर्य, आपसी सदव्यवहार और एकता का परिचय दिया। लोगों में दुख कम ना था। लेकिन सबने जनहित में

कार्य किया, और भरसक एक दूसरे का सहारा बने। भूकंप के दौरान यहां ज्यादा नुकसान नहीं होता। इस तकनीक से घर बनते हैं की लचक जाए पर जल्दी गिरते नहीं। संकट की घड़ी में इनका धैर्य, आपसी भाईचारा मिसाल है। ऐसा नहीं कि कालाबाजारी शुरू हो गई, और लोगों ने फायदा उठाया। न कहीं दुकानें लूटी गई न अन्य कोई व्यवधान आया। यहां लोगों को भूकंप आने के पहले क्या करना चाहिए, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को पता होता है। जापान की मीडिया शांत भाव से अपना प्रसारण करती है। जापान में समय की पाबंदी शीर्ष पर है। मुझे याद है बुलेट ट्रेन में सवार होने के लिए मात्र 8 मिनट पहले आपको रेलवे प्लेटफार्म पर आना होगा। ये नहीं की एक घंटे पहले पहुंचकर बेमतलब हो हल्ला मचाएं। दुनिया में कई देश है, लेकिन रेल संचालन का यह नियम विरले देखने को मिले। हम प्लेटफार्म पर बस आठ मिनट पहले आए थे, और एक खास लाइन के भीतर खड़ा होना है। यात्री उतरेंगे और फिर हमें चढ़ाना था। तनिक धक्का मुक्की नहीं, शोरगुल नहीं, शांति से काम हुआ और ट्रेन खुल गई।

ऐसा सेकंड व मिनिटों का हिसाब अन्य देशों में भी होते हैं। लेकिन जापान की तत्परता की मिसाल नहीं। कर्मचारी घड़ी देखकर ऑफिस में प्रवेश करते हैं, अगर बुलेट ट्रेन देरी से पहुंची तो ऑफिस में कर्मचारियों को देर होगी। इसके लिए ट्रेन को जिम्मेदार माना जाता है। उगते सूरज का देश, जापान को कहा जाता है। सच, सूरज दिस देश में सबसे पहले दस्तक दे, उसे अपने रोशनी से नहलाये उस देश को आगे बढ़ना है। जापान में 'वाबी-सबी' एक पुरानी जापानी फ़िलॉसफी है, जिसमें अधूरेपन में भी पूर्णता या संतोष की अनुभूति को महसूस करने का एक सहज मार्ग दिखता है। किसी काम की पूर्णता या परफेक्शन में बहुत सी बातें शामिल होती है। जिन पर हमेशा हमारा कंट्रोल नहीं होता। इसके लिए मानसिक तकलीफ, तनाव का होना आपके शरीर के लिए अच्छा नहीं हैं। इसलिए आपसे कोई पूछे, आप कैसे हैं ? आप जवाब दीजिए, मैं ठीक हूं। जापान में यदि कोई गर्भवती महिला सड़क से गुजरती है तो लोग उसे रास्ता देते हैं, और सम्मान में अपने सिर से टोपी उतार लेते हैं। वे जानते हैं कि, यह स्त्री इस देश का भविष्य अपने गर्भ में लेकर चल रही है। जापान में महिलाएं पूर्णत सुरक्षित है। यहां छोटी उम्र का बच्चा भी गर पैदल स्कूल जाता है तो, हर नागरिक उसका ख्याल रखेगा। बच्चे घर से अकेले स्कूल के लिए निकलते हैं।

ऐसा नहीं की माएं उन्हें छोड़ने जाएगी। बच्चा घर से बाहर निकला तो हर हालत में सुरक्षित है। बच्चों के स्कूल बैग के रंग से लोग समझ जाते हैं कि, वह किस क्लास में पढ़ते हैं। जापानी लोग अपने दोस्तों, परिवार के साथ ज्यादा समय बिताते हैं। पारिवारिक एकता यहां के लिए जरूरी है। ये अपने लाइफस्टाइल, अपने कल्चर और काम करने की निष्ठा के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहां के लोग अपने शांत स्वभाव

और उदारदिल के लिए जाने जाते हैं। रास्ता-घाट में इनकी फुर्ती देखते बनती है। इनकी चाल में कभी सुस्ती नहीं, और न ही ऊंची आवाज में बात करना। यहां हमें 'ओसाका स्टेशन' दिखाया गया, जो किसी फाइव स्टार होटल से कम ना था। एक रेलवे स्टेशन इतना भव्य और हां जापान घूमने के दौरान हमें जहां कहीं वॉशरूम देखने को मिले उसकी तुलना नहीं है। पब्लिक प्लेस में ऐसे भव्य वॉशरूम दुनिया में मैंने इतने सुंदर वॉशरूम कहीं नहीं देखा था। जापान से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं, अगर सीखना चाहे तो। जापान में कुछ दिनों का प्रवास हमें अचंभित कर गया। बच्चों को स्कूल में सफाई की ट्रेनिंग दी जाती है। वे बचपन से इसका महत्व समझते हैं। ओर देशों की बात ना करके, अगर मैं यह कहूं कि हमें जापान से बहुत कुछ सीखना चाहिए। सीखने के लिए लिस्ट की कमी नहीं, किंतु हम इन बातों को कभी सीरियस होकर सोचें तो।

प्रश्न- आप एक ओर अपने आप कों नास्तिक कहती है, दूसरी ओर 'बौद्ध धर्म की बातें, नीतियाँ अच्छी लगती है' ऐसा कहती है, आप कैसे सामंजस्य स्थापित करते है ?

उत्तर- हां, मैं डंके की चोट पर कहती हूं कि, मैं नास्तिक हूं। हमारे देश में नास्तिकता को अक्सर अनास्था, अनैतिकता एवं अनाचार से जोड़ा जाता है। यह धारणा मिथ्या एवं भ्रामक है। जबकि बड़ा से बड़ा नास्तिक मानवता का प्रबल पक्षधर रहा है। 'नास्तिक' होना ज्यादा कठिन काम है। आपको उसमें तर्क खोजने पड़ते हैं। 'आस्तिक' आंख बंद कर हर बात को मान लेते हैं। 'पत्थर' दूध-दही, प्रसाद नहीं खा सकते हैं। इसे नास्तिक समझता है, लेकिन आस्तिक बड़ी आसानी से मान लेता है। पर ये कभी संभव हो सकता है ? कोई भी धर्म शाश्वत, अनादि, अनंत नहीं है, और न ही कोई ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। अगर ऐसा होता तो समस्त विश्व में एक ईश्वर, एक धर्म होता। कोई जाति अथवा संप्रदाय अगर यह कहता है, कि उसका धर्म अनादि, अनंत, शाश्वत, सनातन है और उसका ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ है, तो यह सोच उसके सीमित, अविवेकपूर्ण और भ्रांत मानसिकता का परिचायक है।

आज पूरी दुनिया में धर्म को लेकर मार-काट मची है। हमारा धर्म सबसे ऊंचा है इस चक्कार में अबोध जनता मिट रही है। आज तक धर्म के नाम जितने लोग मरे हैं, उतने किसी हारी बीमारी से नहीं मरे। रही बात बौद्ध धर्म की प्रशंसा की, तो अच्छी बातें हैं बौद्ध धर्म में। लेकिन बौद्ध धर्म के नाम पर भी प्रदर्शन हो रहे हैं। बुद्ध की मूर्तियां गढ़ी गई, जबकि गौतम बुद्ध ने अपने जीवन में यह कहा था- उनकी पूजा नहीं करनी है। न ही उनकी मूर्तियां गढ़नी है। फिर भी आम लोगों की मानसिकता, जितने मंदिर उतनी मूर्तियां और फल-फूल, लोबान, मोमबत्ती, अगरबत्ती, अगर किसी धर्म में अच्छी बातें है तो उसे ग्रहण कीजिए।

कुछ ऐसी बातें जिन्हें हम जानते हुए भी नहीं समझना चाहते। जीवन में दुख का कारण है तृष्णा और अज्ञानता। अपने इरादे को सही रखें। झूठ का मार्ग छोड़ें, सत्य की वाणी बोलिए। अपना नैतिक आचरण ठीक रखिए। आपके द्वारा किसी को दुख न पहुंचे इसका ख्याल रखिए। चोरी न करना, प्राणी हिंसा न करना, व्यभिचार न करें, झूठ न बोले आदि-आदि कई बातें हैं। अगर इसे हर इंसान अपना ले तो जीवन सफल हो जाए। हमारा समाज बदल जाए। बौद्ध धर्म की नीतियां अच्छी है तभी तो कई देश में इस धर्म को आदर सहित अपनाया गया। बौद्ध धर्म हमारे भारत से उठकर दुनिया के कई देशों में गया और वे सभी देश आज उन्नति पर है। कंबोडिया, वियतनाम कभी हिंदू देश था। आज वह बौद्ध धर्म का पालन करता है। इसके पीछे क्या कारण है ? बौद्ध धर्म में किसी अंधविश्वास, अंधास्था के लिए स्थान नहीं है। फिर भी धर्म को धंधा बनाने वाले मौका निकाल ही लेते हैं। आपके जीवन में धर्म का बस इतना ही स्थान हो- कि वह बाद में 'अफीम' ना बन जाए। गौतम बुद्ध पर हरिवंश राय बच्चन की कई कविताएं हैं।

"पत्थर में भगवान है

यह समझाने में धर्म सफल रहा

पर इंसान में इंसान है

यह समझाने में, धर्म असफल रहा..."

गौतम बुद्ध ने स्वयं कहा था-

"मेडी पूजा मत करना

ना ही मुझसे कुछ उम्मीद लगा के रखना

कि मैं कोई चमत्कार करूंगा

दुख को पैदा तुमने किया है और उसको

दुर तुम्हें ही करना होगा

मैं सिर्फ तुम्हें मार्ग बता सकता हूँ

लेकिन उस दास्ते पर तुम्हें ही चलना पड़ेगा..."

तथागत ने यह भी कहा था जो तर्क नहीं करता वो धर्मांध हैं, जो तर्क नहीं कर सकता वो मुर्ख है। जो तर्क करने का साहस नहीं कर सकता वो गुलाम है। 'अप्पो दीप भव' सुन्दर बात है। सबको तर्कशील बनना होगा। आँख बंद कर किसी बात को न स्वीकारे। मैं बौद्ध धर्म की नीतियों को पसंद करती हूँ। न की उनकी मूर्ति पर पुष्प अर्पण करूं। मेरे जीवन में 365 दिन किसी धर्म का प्रवेश नहीं है। इस विज्ञान युग में लोग बैलगाड़ी से निकल हवाईजहाज में सफर कर रहें हैं। 24 घंटे हाथ में मोबाइल, जब चाहे दुनिया में किसी से बात कर लें, इतना कुछ परिवर्तन होने के बाद भी पत्थर की पूजा ? तर्कशील बनिये और धर्म के धंधे से दूर रहें।

स्वयं मनुष्य अपनी नियति, भाग्य का निर्माता है। समता, स्वतंत्रता व न्याय प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। कोई भी ऐसी व्यवस्था जो मनुष्य को इन अधिकारों से वंचित करती है, वह मानव विरोधी है। चाहे वो धर्म हो या साम्राज्यवाद या फांसीवाद या निजी स्वार्थों पर आधारित विकृत तथा जनविरोधी जनतंत्र। मनुष्य सर्वोपरि है, उसके ऊपर कोई नहीं। न धर्म, न ईश्वर। मानव समाज की किसी समस्याओं का हल धर्म के पास नहीं है। अगर किसी धर्म या किसी ईश्वर में इतनी ही शक्ति होती, तो दुनिया के हर कष्ट, हर समस्या चुटकी बजाते दूर हो जाती। लेकिन यहां तो उलटी गंगा बह रही है। मंदिरों व ईश्वर को बचाने के लिए पुलिस फोर्स की तैनाती होती है। मानव धर्म को अपनाइये और सुख-चैन से रहिए। इसमें रुपये-पैसे खर्च नहीं होते, बल्कि अच्छी नेकनियति और प्रेम व्यवहार ही काम लगता है। आज जरूरी है कि पूरे विश्व में मानव धर्म की परिकल्पना रखी जाए। लोग समझते नहीं, ऐसी बात नहीं है, बात ये है की, वो अपने को बदलना नहीं चाहते। और यही धार्मिक उन्माद, कट्टरता एक दिन पूरी दुनिया को नेस्तनाबूद कर देगी। आये दिन धर्म के नाम मारकाट हमें कहाँ ले जायेगी। जितना जल्दी चेत जाये उसी में मानव का हित है। वरना अकाल मौत होती रहेगी।

धर्म और ईश्वर मरने से पहले जीवित लोगों की इस दुनिया की खुशहाल बनाने में जितनी दिलचस्पी नहीं रखते, जितना कि मरने के बाद उनकी पारलौकिक दुनिया को बनाने में रखते हैं। धर्म और अंधविश्वास का गहरा सम्बन्ध है। एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। धर्म रहेगा तो अंधविश्वास रहेगा, और अंधविश्वास रहेगा तो विकास, परिवर्तन की मानसिकता विकसित नहीं हो पायेगी। हमें नितरोज के इन प्रपंचों से बचना चाहिए।

प्रश्न- पिछले दो दशक से आप निरंतर यात्राएं कर रही हैं, क्या कोई ऐसा स्थान है, जो आपको अत्यधिक प्रिय है और आप वहां बार-बार जाना चाहती है ?

उत्तर- इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है, क्योंकि मैंने आजतक जो देखा, उन स्थानों को भूल नहीं पाती और कुछ न कुछ रह गया देखने को, अब हर वो स्थान जो मैं मिस कर गई, उसे देखने की इच्छा पुनः होती है। इजिप्त घूमने के दौरान 'अबु सिंबल' छुट गया था। जिसकी कसक बनी हुई है। अमेरिका की बात करूं तो नॉर्थ अमेरिका, आउथ अमेरिका दोनों देख लिया है, लेकिन ये दोनों महादेश है। इनमें स्थित खास-खास स्थानों को कुछ दिनों में देखना असंभव है। जो देखने का मन होता है छूट गया है। उसकी लिस्ट लंबी है। जो देखा उसके लिए संतुष्टि नहीं, जो छुट गया उसके लिये अफओस। दिल को ये कहकर खुद ही समझाती हूँ कि, फिर महीने- महीने किसी देश में डेरा डाल कर रखिए तो सब देखा जा सकता है। किन्तु इसके लिए लाखों रुपये खर्च होंगे, घर-दुआर छोड़कर इतने दिनों के लिये बाहर रहना। हां अमेरिका में स्थायी निवास करने वाले खूब घूम सकते हैं। मेरा बेटा 'अभिजीत वर्मा' इन दिनों नॉर्थ अमेरिका के नॉर्थ केरोलिना में आइटी प्रोफेशनल है।

उसकी शादी हो गई है, और दो बेटियां हैं। बड़की 'आन्या' (अदित्री) और छोटकी 'मायरा'। इन दोनों उम्र क्रमशः 12 व 8 वर्ष है। बहू रश्मिप्रिया भी वहां इंजीनियर है। परिवार को अमेरिकी नागरिकता मिल गई है, और वे बड़े आराम से हैं। बेटा अभिजीत हमेशा कहता है, अमेरिका में जो छूट गया है, वो मैं दिखा दूंगा। लेकिन हमारा जाना ही वहां नहीं हो रहा है। कुछ अपना प्लान निकल आता है। खैर...

अंटार्कटिका (साउथ पोल) से घुम कर आने के बाद, मन में एक बात का अफसोस रह गया कि, हम हमें डे लाइट कम मिला। काश उस वक्त गये होते। (नवंबर, दिसंबर, जनवरी) जब सूरज निरंतर आकाश में चमकता रहता है। हम जब गए थे, साढ़े आठ, नौ बजे तक सूरज डूब जाता। न डूबता तो अंटार्कटिका को सौ प्रतिशत देख पाते। एक और अफसोस कि हमने 'व्हेल' को अच्छे से नहीं देखा। टुकड़े-टुकड़े में दर्शन होते रहे। कभी थोड़ी मुंडी दिखी तो कभी थोड़ी पूंछ। दुनिया के सबसे विराटकाय जीव व्हेल को साबुत नहीं देखना, इसके लिये दुख है। कोलकाता के गो एव्री वेयर टूर कम्पनी के सभी स्टाफ से अच्छी जान-पहचान है। मैंने एक बार यूँ ही वहां के सीनियर स्टाफ अंजन से फोन पर कहा, "अंजन अंटार्कटिका मुझे फ्री में ले जाओ तो मैं जा सकती हूँ, और हां बतौर गाइड मैं मदद भी दूंगी।" अंजन क्या जवाब देते, मेरा प्रश्न ही बेतुका था। इन दिनों प्रति व्यक्ति 12-13 लाख खर्चा है। भला अपना नुकसान क्यों उठाते। हां लेकिन इच्छा है कि दुबारा अंदार्कटिका पर कदम रखूं। पेंगुइन को थाम उन्हें प्यार करू, ढेर सारे जीव-जंतु देखूं जो सिर्फ साउथ पोल पर ही पाये जाते हैं। और हां, वो भीमकाय, विराट व्हेल को मुंडी से लेकर पुंछ तक वन पीस में देखें। लेकिन इस जन्म में दुबारा साउथ पोल देखना नहीं लिखा है। खैर, एक बार देखा तो

सही। उसे भूलना मुस्किल है। ड्रेक पॅसेज जहां कई महासागर एक जगह जमा होते हैं, और लहरें उफान मारती है। उस वक्त हमारा विशाल आकार वाला क्रूज शिप कैसे डगमगा रहा था। कमरे की वस्तुएं, पानी की बोतल आदि इधर से उधर घूम रही थी। दो-ढाई दिन जहाज ड्रेक पॅसेज के चंगुल में रहा। उस वक्त पर्यटकों को हिदायत दी गई थी, डायमॉक्स टेबलेट खाकर अपने कमरे में आराम कर। सच्ची लग रहा था क्रूज शिप ने जमकर ठर्रा पीया है तभी शेषनाग की तरह डोल रहा था। ऐसे अनुभव आजीवन चिर संचित हो जाते हैं। दुबारा न जाएं तो पहली बार का दर्शन ही अब तक कहाँ भूला पाई। अंटार्कटिका में लाखों वर्षों से बारीश नहीं हुई है। स्नोफॉल हमने रोजाना देखा। अंटार्कटिका एक अद्भुत देश है। इसकी तुलना नहीं।

रात भर सूरज को न देखने का मलाल 'आर्कटिक' (नॉर्थ पोल) मे खत्म हुआ। सुरज 24 घंटे सिर पर सवार। सूरज की उपस्थिति से रात को सोना मुस्किल था। कब दिन हुआ, कब रात पता ही न चले। मेरे जीवन के ये दो अति महत्वपूर्ण जगहें थी। जिन्हें देख कर लगा कि अब शांति से अगले जीवन के लिए प्रस्थान किया जा सकता है। साउथ पोल पर व्हेल तो नार्थ पोल पर पोलर बियर का जलवा, और दोनों का दर्शन हुआ। यात्रा सार्थक रही। इन सभी जगहों पर जाना आसान नहीं है। लंबी दूरी और उतना ही भारी खर्च। इस एक जीवन में सब देख पाना संभव नहीं। फिर भी कभी-कभी समुद्र किनारे चुपचाप एकांत में बैठना या फिर पहाड़ों की निस्सीम शांति में कुछ वक्त गुजारना अच्छा लगता है। दुनिया में कोई भी स्थान चाहे जितना भी सुन्दर क्यों न हो, वहां बार-बार जाने से अच्छा है, जिन देशों को आपने नहीं देखा, वहां चले जाये। हां, जापान दुबारा जाने का मन करता है। अक्टूबर-नवम्बर में वहां 'विस्टीनचा' फूलों की बहार दिवती है। ये फूल बहुत सुंदर होते है और ऊपर से नीचे एक मीटर की लम्बाई तक मूड सकते है। लेकिन जापान दुबारा न जाकर उसके आसपास का कोई देश देखना चाहिए। जैसे कोरिया, ताइवान, 'ईस्टर आइलैंड' (चिली देश) देखने की खूब इच्छा है। देखू स्वप्न फलित होते है या नहीं। वेनेजुएला में स्थित दुनियां की सबसे ऊंचाई से गिरने वाले 'ऐन्जल फ़ॉल्स' को देखने का ख्वाब है। बहुत कुछ बाकी है। जो देख लिया उसकी भी खुशी है। कई सुन्दर जगह अपने आप से रिपीट हो गये। ये भी तसल्ली दे गया। इंग्लैंड को जितना देखिए, मन नहीं भरता। इटली दो बार हुआ लेकिन बहुत कुछ रह गया। सागर देसले भाई अब तो दिल में ये ख्याल भी आता है कि, अंतरिक्ष की सैर करूं, और चांद पर उत्तर थोड़ा आऊ। इसके लिए सात जन्म भी कम पड़ेगा। लेकिन सोचने में क्या जाता है। ख्वाब ऊंचा ही पालिएं।

प्रश्न- साहित्य व समाज की दृष्टि से, यात्रा साहित्य की उपादेयता (महत्व) क्या है ?

उत्तर- 'यात्रा साहित्य' को आप यात्रावृत्तांत, यात्रा संस्मरण भी कह सकते हैं। आपके मन में उठते किसी भाव को कागज पर उतार देना ही एक तरह का साहित्य बन जाता है। यात्रा साहित्य की शुरुआत अगर बहुत पहले कुछ लोगों ने नहीं किया होता, तो सोचिए साहित्य जगत अब तक अधूरा होता। कहानी, कविता, लेख आदि तो घर बैठे भी गढ़े जा सकते हैं, लेकिन यात्रा साहित्य तो बिना यात्रा किए, आसपास दूर दराज बिना घूमे कैसे संभव था। वो पहले का जमाना जब तक आए भ्रमण नहीं करते थे, तब तक दुनिया बहुत बड़ी लगती थी। लेकिन जैसे-जैसे यात्राओं का आवेग बढ़ा, बंद ताले आप से आप खुलते गये। पैदल यात्रा से शुरुवात करके, बैलगाडी, पानी के जहाज, कार, बस पे सवार फिर रेल और फिर आसमान से होते हुये, यानी हवाई जहाज से जो यात्राएं अपने-अपने समय पर, बहुत धीमे-धीमे ही सही, किन्तु लोग यात्राएं करते रहें।

यात्रा करने के लिये बस कुछ बहाने चाहिये। और फिर इसने तेजी पकड़ ली। और ये पृथ्वी समस्त लोग सिमटते गए। सोचिये किसी भारतीय ने जब पहली बार दुनिया नापनी शुरु की, उसके मनोभाव तब क्या रहे होंगे। और ये जरूरी नहीं कि सभी ने उसे अपनी भाषा में कलमबद्ध किया होगा। और जिसने पहली यात्रा साहित्य (वृतांत-संस्मरण) रची होगी उसकी मनोदशा क्या रही होगी। कितनी उत्तेजना वाले पल होंगे लिखते वक्त, और जब वो पहली बार प्रकाशित होकर जनता के सामने आई होगी। हम इन सारी बातों का अपने-अपने तरीके से आकलन कर सकते हैं। यात्रा करना और कलमबद्ध करना, ऊंची छलांग थी।

हरदेवी जी की पहली यात्रा साहित्यकार माना जाता है, जो अपनी शिक्षा के लिए 'लंदन गई थी। और बाद में 'लंदन यात्रा' नामक पुस्तक लिखी। महिला लेखिका में कई नाम है और पुरुषों मे अनगिनत, लोग है। जवाहर लाल नेहरू की प्रसिद्ध पुस्तक 'भारत एक खोज' हम भारतीयों के लिए एक अमूल्य निधि है। उस वक्त उन्होंने इसकी महिमा समझी और रच दिया। भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का वर्णन किया है।

राहुल सांकृत्यायन के बारे में तो कुछ भी कहना सूरज को दीपक दिखाना है। भारत के कई भूखंडो का विस्तार से वर्णन करके, फिर बाहर भी निकले। इस कड़ी में अज्ञेय जी भी हैं। व और ढेर सारे लेखक। इन्हीं में एक ऐसे व्यक्तित्व की चर्चा करना चाहूंगी जिनके बिना यात्रा साहित्य अधूरा है। आदरणीय रामेश्वर टांटीया। इन्होंने विपुल यात्रा साहित्य लिखा है। ये एक प्रसिद्ध उद्योगपति ही नहीं, बल्कि अपने समकालीन मित्रों जिसमें बड़े-बड़े नेता थे, और बाद में सीकर- राजस्थान के दो बार लोकसभा के सदस्य बने और बिहार, बंगाल आदि कई-कई जगहों से होते हुए अनगिनत बार विदेशों कि यात्रा की। और देश-

विदेश की सभी यात्राएं करने के बाद उसे पुस्तक रूप दिया। जो हिंदी साहित्य के हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य कार्य बन गया। इस पुस्तक को रामेश्वर टांटीया समग्र, हर स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में रखनी चाहिए। इस एक पुस्तक का मेरे लिए बहुत महत्व है।

यात्रा साहित्य न रचा गया होता तो, शुरुआती दौर में हमें कुछ भी पता न चलता कि, अन्य जगहों पर क्या हो रहा है। इसका महत्व साहित्य और समाज दोनों दृष्टिकोण से बहुत अधिक है। यात्रा साहित्य, पाठकों को नए स्थानों, संस्कृतियों और कई तरह के अनुभव प्रदान करता है। साहित्यिक दृष्टिकोण से तो इसका बहुत महत्व है, लेकिन पढ़ने वालों को भी विभिन्न दृष्टिकोण से परिचित कराता है। यात्रा साहित्य कोई कथा, कहानी नहीं होती है, कि पढ़े और भूल जाए। अगर आपको नए-नए शहर, देश-विदेश घूमने की इच्छा है, तो यात्रा साहित्य को ज्यादा से ज्यादा पढ़िए। और अपने मानसिक भाव को शांत कीजिए। कोई भी यात्रा वृतांत निरस नहीं हो सकता। इसमें विविधता, समृद्धि, वहां की परंपराओं, रीति रिवाज, जीवन शैलियों, ऐतिहासिक महत्व को बताया जाता है। एक देश को इससे ज्यादा और क्या जानिएगा ?

यात्रा साहित्य पढ़कर सांस्कृतिक समझ, सामाजिक जागरूकता, पर्यटन और निज देशों का आर्थिक विकास, व्यक्तिगत विकास होता है। बहुत सारी बातें हैं जो आप पढ़ते वक्त पहली बार जानते हैं, और तब आपकी उत्सुकता बढ़ती जाती है। आप यात्रा साहित्य पढ़कर अपने आप को बहुत समृद्ध कर सकते हैं। नये-नये स्थानों की खोज, नये अनुभवों से दो-चार होना, सुखद बात है। आप जितना पढ़िएगा, जितना घूमियेगा उतना आपके अंदर, 'आत्म खोज', आत्म सुधार बढ़ता रहेगा। जीवन को नए सिरे से सोचने का ख्याल पैदा होगा। बस पढ़ने, जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए। यहां एक उदाहरण देती हूं, 'साउथ अफ्रीका' भ्रमण के दौरान हम 'मोसेल बे' (mossel bay) देखने गये थे। अब ये मोसेल बे क्या बला है, कुछ नहीं पता था। बाद में मालूम हुआ यहां इस इलाके में कभी डच नाविक आकर ठहरे थे। खाने की सामग्री उनकी खत्म हो रही थी। उन्हें कुछ भजन चाहिए था। उन्होंने इस द्वीप पर पाये जाने वाले 'सीप' और 'घोंघे' को अपने भोजन का हिस्सा बनाया। और उस अनाम जगह को 'मोसेल बे' का नाम दिया, और आगे चल दिए। तो सोचिए कितनी रोचक बात है। मेरी हर यात्रा वृतांत में ऐसी खोजपूर्ण बातें जरूर रहेगी। ताकि पाठक लाभान्वित हो सके।

एक छोटी घटना और जोड़ना चाहूँगी, 'कोस्टल इटली' भ्रमण के दौरान उस माउंट विसुनियस के क्रेटर के मुहाने तक पैदल यात्रा करके पहुंच गई थी। उसकी विराटता को देखा और माउंट विसुनियस ने सन 79 के दौरान अपने अंदर से जो विस्फोट किया था, जिसके उद्गार गर्भ राख, लावा, पत्थर से कई कई शहर, कई

कई मीटर नीचे दब गये। और हजारों लोगों की जान चली गई। विश्व 'विसुनियस' नाम से एक 'अग्नि देवता' थे। जिनकी पूजा हजारों वर्षों से चलती आ रही थी, जब तक माउंट विसुनियस नहीं फटा था, तब तक वहां आसपास रहने वाले लोगों को ये तब नहीं पता था कि, 'ज्वालामुखी' होता क्या है ? विसुनियस नामक अग्नि देवता, जिन्हें आसपास के लोग पूजते थे, जाने किस बात पर इतने उग्र हो गए कि एक दिन जमकर बरस पड़े, और निरपराध, मासूम लोगों को गहरी मौत की नींद सुला दिया। पोम्पेई, हरकुलेनियम जैसे अन्य कुछ शहर एकदम खत्म हो गए।

कई कई दशकों तक सबकुछ मलबे में दबा रहा, और फिर पुराने शहर खुदाई में बाहर निकलते गए। रोमन शहर, रोमनवासी उस वक्त जैसे, जिस हालत, अवस्था में थे वहीं गिरकर खत्म हो गए थे। बाद में उनके शव को किसी खास विधि से संरक्षित किया गया, और आज हम संग्रहालय में उन्हें देख सकते हैं। इटली सरकार की बहादुरी को दाद देनी चाहिए। जो लगभग दो हजार वर्ष पूर्व नष्ट हुई वस्तुओं को खुदाई करके, संरक्षित करके पूरे विश्व को दिखा रहा है। एक भगवान, अग्नि देवता विसुनियस ने अपने भक्तों को मारने में एक पल की देरी नहीं की। भक्त पुंछ भी ना सके, "है ईश्वर हमारी गलती क्या थी"? तो ऐसी ही ढेरों रोचक बातें यात्रा साहित्य में भरी है। हर लेखक, लेखिका ने अलग-अलग तरीके से यात्रा वृतांत रची है, जो समाज हित में काम आएंगे। जरूर मानसिक संतुष्टि मिलेगी। मेरी 26 यात्रा वृतांत में विस्तार से सब जानने को मिलेगा। और हां, ये मेरी शुरुआत है, अंत नहीं। यात्राएं ढेरों करनी है, सब पर बारी-बारी किताब भी आयेगी। यात्रा साहित्य पढ़ते रहिए, अपने को हर पहलू पर समृद्ध करते चले। जितना पढ़ेंगे, उतना आनंद आएगा।

प्रश्न- वर्तमान समय में यात्रा पर जाने वाले लोगों के लिए आपका क्या संदेश है ?

उत्तर- आज यात्रा करना बहुत सरल सीधा हो गया है। किसी प्रतिष्ठित नामी टूर कंपनी के साथ यात्रा पर निकल जाये। वहां आपको किसी तरह की परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। यात्रा के दौरान पूरे सतर्क रहे। अपने लगेज, खासकर पासपोर्ट, रूपए पैसे की अतिरिक्त देखभाल करें। कपड़ा-लता कम से कम रखिए। कोई आपके कपड़े नहीं देखता। सफर के दौरान बोझ कम रहे तो बेहतर। और हां इन दिनों खासकर लड़कियों, में सोलो टूर करने की बलवती इच्छा जाग उठी है। इसे वो 'क्रेज' 'बहादुरी' समझ रही है। गर कोई मुझसे पूछे तो मैं बिल्कुल इनकार कर दूं। वैसे मुझसे पूछने वाला कोई नहीं है। उनके पेरेंट्स ही काफी है हां-ना कहने के लिए। दुर्घटना किस रूप में, किस स्थान पर, किस देश में, आयेगी कोई नहीं बता सकता है। इसलिए बहादुरी इसी में है कि आप ग्रुप में सफर करें। अगर ग्रुप में घूमना पसंद नहीं है तो ये आपकी

बहुत बड़ी बहादुरी है। बुद्धिमत्ता नहीं, दुनिया के अभी जो हालात है, उसमें सावधान रहना जरूरी है। कुछ अघटित न हो। मेरे साथ कई खट्टी मीठी घटनाएं हुई है लेकिन ऐसा कोई कटु अनुभव नहीं हुआ है। लेकिन मेरे सहयात्रियों के साथ ऐसा कुछ घटित हुआ है जिसे देख हम सब अवाक थे।

स्पेन, पुर्तगाल भ्रमण के दौरान हमारे ग्रुप के कुछ लोगों के पासपोर्ट चोरी हुये। सच पूछिए तो ये सब उनकी खुद की असावधानी से ही हुआ। लेकिन हमारे साथ टूर एजेंसी (गो एवरीव्हेयर कंपनी) के टूर लीडर अंजन जी थे। उनकी समझदारी, तत्परता और भरपूर सहयोग से उस यात्रा के दौरान (येन-केन प्रकारेण) उन्होंने उस गंभीर समस्या को अपने तरीके से हैंडल किया, और जिनके पासपोर्ट चोरी हुये थे, उन्हें टेंपरेरी पासपोर्ट, वीजा का कागज दूतावास की तरफ से उपलब्ध कराया गया। और उनकी आगे की यात्रा निर्बाध चलती रही। विदेशों में पासपोर्ट की चोरी, खासकर यूरोपीयन देश, साउथ अफ्रीका, दोनों अमेरिका (साउथ नॉर्थ) आदि और भी कई देश है जहां गड़बड़ होने की पूरी आशंका रहती है।

किसी भी यात्रा के पूर्व हमें एक दिन गेट-टूगेदर के नाम पर सबको बुलाया जाता है, और खास-खास बातों को समझाया जाता है। जिसमें एक बात प्रमुखता से बोली जाती है, 'आप गुम हो जाइये, किंतु पासपोर्ट गुम नहीं होना चाहिए'। उस वक्त हमें हंसी आती है, लेकिन पासपोर्ट गुम होना कितनी भयावह बात हो सकती है, कोई मुक्तभोगी ही समझ सकता है। ऐसी दुर्घटना मैंने दो-तीन बार सफर के दौरान घटित होते देखा है, और उस वक्त मेरी मनःस्थिति ये होती है कि, यह दुर्घटना गर मेरे साथ हुई होती तो मेरा हार्ट फ़ैल जरूर हो जाता। एक और घटना की चर्चा कर दूं, जो मेरे दिमाग से उतरती नहीं। सन 2015 के जून महीने में हमने 'स्कैन्डिनेविया' (नॉर्वे-स्वीडेन-डेनमार्क) यात्रा की थी। ग्रुप में कई सहयात्री थे। जिस दिन हम 'स्टॉकहोम' स्वीडेन की राजधानी उतरे, दिनभर शहर दर्शन करके रात को डिनर करना था, और फिर वहां से होटल रात्रि निवास करना था। हम एक रेस्तरां में पहुंचे, हाथ धोकर अभी हमने अपनी सीट संभाली। थालियां निकलती, खाना खाया जाता, हम खाते उसके पहले एक आकस्मिक दुर्घटना घट गई। हमारे एक सहयात्री का एक छोटा बैग जो टेबुल के करीब रखा था, गायब हो गया। उस बैग में दोनों के मोबाइल, पासपोर्ट, डॉलर आदि नगदी था। अब तो बहुत बड़ा संकट, परेशानी हो गई। जिसका बैग चोरी हुआ था, उसकी हालत खराब। किसी ने नहीं सोचा था इस तरह पलक झपकते ये दुर्घटना घट सकती है। रेस्तरां के मालिक के साथ बहुत देर मगजमारी हुई किंतु कोई हल नहीं निकला। उस रेस्तरां में सीसीटीवी कैमरा टाइप की कोई भी मशीन नहीं लगी थी। सबके होश उड़े हुए थे।

यात्रा के प्रथम दिन ही इस तरह की वारदात। खैर, मन मार कर डिनर का काम सलटा हम स्टॉकहोम के होटल पहुंचे। वहां लॉबी में मेरी बचपन की दोस्त 'स्वप्ना शर्मा' खड़ी थी। चालीस वर्ष बाद उसे भेंट हुई थी। मेरा उससे पहले ये सब लाइनअप किया हुआ था। संयोगवश स्वप्ना और उसके पति 'बुद्धदेव शर्मा' स्वीडन के स्थायी निवासी बन गये हैं, और स्वप्ना शर्मा यहां की राजनीति में अच्छा खासा दखल रखती है। उसने जब हम सबका उतरा हुआ मुख देखा तो आनन-फानन में कई जगह फोन किया और कल जैसे भी हो आगे की यात्रा न रुके उसका इंतजाम किया। उस दिन रविवार था, सो पुलिस स्टेशन बंद था। किंतु स्वप्ना के कहने से बहुत हद तक राहत मिली। उक्त दंपति को अगले दिन कुछ कागजात दिये गए, जिससे आगे की यात्रा बाधित नहीं हुई। इस चक्कर में बेचारे का ढेरों अतिरिक्त खर्च हो गया। मेरी दोस्त ने बड़े खास मौके पर साथ दिया। ऐसी और भी कई घटनाएं हैं। सबका उल्लेख करना ठीक नहीं। बात खींचती जायेगी, लेकिन यात्रा के दौरान एक बात का ध्यान आपको रखना होगा कि, आपकी वस्तु गुम होगी तो उसके जिम्मेदार आप होंगे। आपको यात्रा के दौरान हर वक्त चौकन्ना रहना होगा। इसीलिए मैं सबसे एक ही बात करती हूं की, यात्रा कहीं भी कीजिए, एक अच्छे ग्रुप के साथ, अच्छी टूर एजेंसी के साथ। यात्रा के दौरान मोबाइल का चोरी होना, भी आम बात है और इन दिनों सबके प्राण मोबाइल में ही बसते हैं। मोबाइल गया तो चैन गया। स्पेन यात्रा के दौरान हमारे साथ एक महिला डॉक्टर थी, उसका मोबाइल चोरी हो गया। बहुत दुखी थी। रात खाने के वक्त उनके मुंह से निकला "अब यह फ़ील हो रहा है कि, मेरी जिंदगी में एक पति के होने से ज्यादा अहमियत मेरे मोबाइल की थी।" उनकी बात सुनकर हंसी भी आ रही थी, लेकिन रोक कर रखी। बातें अनगीन है। कुछ कटु अनुभव के साथ ढेरों अच्छे पल भी आते हैं सफर के दौरान। जो बीत गई, सो बात गई।

मेरा मकसद किसी यात्री को भयभीत करना नहीं है, बल्कि सावधान कर रही हूं। दूसरे के अनुभव से ही हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। यात्रा को सुखद बनाना है तो तनिक सावधानी बरते। ऐसा नहीं है कि एक यात्रा के बाद अगली यात्रा पर रोक लग गई। जीवन में ताजगी चाहते हैं तो समय-समय पर यात्रा जरूर करनी चाहिए। क्योंकि एक जगह पर ठहरा हुआ पानी भी खराब हो जाता है। जिंदगी को खूबसूरत बना बनाया जा सकता है। कुछ सब्र करके, कुछ बर्दाश्त करके और कुछ नजरअंदाज करके। जीवन का अंत तय है। इस सफर का आनंद लीजिए। तनाव आता है तो आए, उसे पालिए मत, वो किसी काम का नहीं। जिंदगी एक ही बार मिलती है, आनंद लीजिए। चंद बातें ओर करके, मैं अपनी बात को विराम देना चाहूंगी। जब भी आप एक अच्छी किताब पढ़ते हैं, तो कहीं न कहीं दुनिया में आपके लिए 'रोशनी' का

एक नया दरवाजा खुलता है। किताबें सबसे शांत और सबसे सदाबहार दोस्त है। ये सबसे सुलभ और बुद्धिमान काउंसलर है, और सबसे धैर्यवान शिक्षक भी। यात्रा साहित्य हो, या अन्य कोई साहित्य आपके जीवन में एक महत्वपूर्ण रोल का निर्वाह करता है, साथ ही एक सस्ती छुट्टियां भी है। जिसे आप जब चाहे खरीद सकते हैं। किताबें ऐसा उपहार है, जिसे आप जब चाहे खोल सकते हैं।

किताबें सम्यता की वाहक हैं। किताबों के बिना इतिहास मौन है, साहित्य गूंगा है, विज्ञान अपंग है, विचार और अटकलें स्थिर हैं। किताबें परिवर्तन का इंजन है, विश्व की खिड़कियां है, समय के समुद्र में खड़ा प्रकाश स्तंभ है। (बारबडा डल्लू तुचमन)

'अर्नेस्ट हेमिंग्वे' ने कहां था, 'एक किताब की तरह वफादार कोई दोस्त नहीं होता'। और अंत में 'हरिवंशराय बच्चन' की लिखी कविता से इसका समापन करूं-

"अनगिनत उन्मादों के क्षण हैं

अनगिनत अवसादों के क्षण हैं

रजनी की सूनी घड़ियों को

किन-किन को आबाद करूं मैं

क्या भूलूं क्या याद करूं मैं।"

मेरी सारी यात्राओं में अनगिन घटनाओं की याद है। क्या कहूँ, क्या भूलूँ, क्या याद करूँ।

सागर देसले : आपका आभार मैडम। आपने अपना मूल्यवान समय साक्षात्कार के लिए निकाला, पुनः आपका धन्यवाद मैडम।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पुष्पगंधा, संपादक- विकेश निझावन, पृष्ठ सं.15

2. वही, पृष्ठ सं.14

3. वही, पृष्ठ सं.14

4. वही, पृष्ठ सं.15

5. वही, पृष्ठ सं.15

6. वही, पृष्ठ सं.14

7. वही, पृष्ठ सं.14

8. वही, पृष्ठ सं.29

9. वही, पृष्ठ सं.15

10. वही, पृष्ठ सं.16

11. वही, पृष्ठ सं.16

12. वही, पृष्ठ सं.16

13. वही, पृष्ठ सं.16

14. वही, पृष्ठ सं.16

15. वही, पृष्ठ सं.16

16. वही, पृष्ठ सं.16

17. वही, पृष्ठ सं.16

18 वही, पृष्ठ सं.17

19. वही, पृष्ठ सं.17

20. वही, पृष्ठ सं.17

21 वही, पृष्ठ सं.17

22. वही, पृष्ठ सं.17

23. माला वर्मा, साउथ अमेरिका, पृष्ठ सं.6

24. माला वर्मा, इंग्लैंड आयरलैंड, पृष्ठ सं.10

25. माला वर्मा, अंटार्कटिका, पृष्ठ सं.9

26. माला वर्मा, स्पेन-पुर्तगाल, पृष्ठ सं.9

27. माला वर्मा, अजरबैजान, पृष्ठ सं.11

28. वही, पृष्ठ सं.16

29. माला वर्मा, कोस्टल इटली, पृष्ठ सं.9